DIGITIZED BY NILESH ANANT, RPR

लोक संस्कृति और कृषि के अन्तर्सम्बन्ध

रफीक खान

लोक संस्कृति जनता की संस्कृति होती है। वह जनता के श्रम और उत्पादन से संबन्धित होती हैं। चूंकि हमारे देश में कृषि ही अभी तक उत्पादन का एकमात्र साधन रही हैं, इसलिये कृषि उत्पादन के विकासमान स्वरुप से लोकव्यवस्था का स्वरुप निर्धारित होता रहा है किन्तु हमारे सामाजिक जीवन में विज्ञान और टेकनालाजी के प्रवेश ने औद्योगिक क्रान्ति को जन्म दिया। उद्योग धंधों की स्थापना के साथ ही उत्पादन के साधनों में परिवर्तन हुआ। कृषि के अतिरिक्त उत्पादन के अगणित नए स्त्रोत ज्ञात हुए। तकनालाजी उत्पादन का सशक्त माध्यम बन गई और कृषि के समानान्तर औद्योगिक व्यवस्था का विकास हुआ जो स्वरुप और गुण की दृष्टि से कृषि व्यवस्था से भिन्न प्रकार की रही है और इस व्यवस्था को जनवादी संस्कृति के अर्थ में परिभाषित किया जा सकता है।

देश का औद्योगिक उत्पादन कृषि पर ही निर्भर करता है। औद्योगिक उत्पादनों के लिये कच्चे माल की व्यवस्था कृषि से ही होती हैं और उद्योगों का प्रसार खेती पर ही निर्भर करता है। देश की लगभग ८० प्रतिशत खेती से जुड़ी हुई जनता ही औद्योगिक उत्पादनों की उपभोक्ता हैं। अतः औद्योगिक क्षेत्र के मजदूर और कृषि से संबंधित किसान एक दूसरे के निकट आ रहे हैं। आज की उन्नत खेती दूसरे औद्योगिक उत्पादनों से जुड़ गई हैं। फलतः दूसरे तरह के उत्पादनों में लगा मजदूर वर्ग भी अपनी उत्पादन संस्कृति, श्रम संस्कृति तथा लोक संस्कृति की रचना कर रहा हैं। यही जनता की जनवादी संस्कृति है। इस संस्कृति ने अपने समय कि बुनियादी जरुरतों को आत्मसात किया है। जनता की यह जनवादी संस्कृति, कृषि संस्कृति को आगे बढ़ाती है। वह कृषि संस्कृति की अपेक्षा अधिक समुन्नत और जागरुक चरित्र को सामने लाने वाली हैं।

कृषि और लोक संस्कृति के सामंतवादी स्वरुप का अपना एक पुराना इतिहास है। मध्ययुग तक की लोक संस्कृति में कृषि की सामंतवादी व्यवस्था के तमाम गुण दोष दिखाई देते हैं, फिर भी चूकि श्रम का स्वभाव रचनात्मक होता है श्रम का गुण संगठनात्मक होता है, सामूहिक होता है और श्रम के मूल्य सामाजिक होते हैं, इसलिये सामन्ती- महाजनी व्यवस्था के विरुद्ध कृषि की लोक संस्कृति का चरित्र व्यापक रहा है। वह समूचे समाज की जीवन दृष्टि के सार्वजनिक उत्कर्ष को प्रकट करती रही है। मध्ययुग के भक्ति साहित्य के केन्द्र में कृषि- संस्कृति है जिसका तत्कालीन सामंती संस्कारों से संघर्ष दिखाई देता है। भक्तिकाल की साहित्यधारा लोकबद्ध जीवन को अभिव्यक्ति देने वाली और उसे आगे बढ़ाने वाली है। भक्त कवियों ने इस काल में सामंती जीवन शैली के विरुद्ध जनता की भावनाओं को अपनी काव्य वस्तु का विषय बनाया। उन्होंने साहित्य में लोकजीवन की सक्रिय प्रतिष्ठा की और सामन्ती समाज की एकरसता और जड़ता को तोड़ने का प्रयास किया। भक्त कवियों ने जहां प्रेम की परम्परागत सामंती धारणा को उदान्त बनाया और मानवीय गरिमा

(क्रमशः पृष्ठ ३ पर)

[क्रमांक- "दो" मई १९८६]

अंश-

(स्वर्ण जयंती अंक)

(प्र. ले. सं. राजहरा की बुलेटिन)

जो आज है उससे बेहतर रचने की प्रक्रिया में.....

इस अंक में..... पृष्ठ

१. आलेख १
२. सम्पादकीय २
३. कविता ५
४. रपट ६
५. कहानी १०
६. गीत १३
७. इकाई की खबरें १७
८. मत /सम्मत १८

सम्पादकीय

प्र. ले. सं. के पचास वर्ष; राष्ट्रीय- अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां और हमारे दायित्व

प्रगतिशील लेखक संघ का स्वर्ण जयंती समारोह तथा चतुर्थ राष्ट्रीय महाधिवेशन ९ से ११ अप्रेल के मध्य लखनऊ में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में नई और पुरानी पीढ़ी के ६०० से भी अधिक रचनाकारों की उपस्थिति एवं सक्रिय हिस्सेदारी संगठन के पचास वर्षों के उत्तरोत्तर विकास को दर्शाती है। इतना ही नहीं इस अवधि में काफी संख्या में प्रगतिशील रचनाओं का सृजन भी हुआ है। खासकर आठवें- नब्बे दशक की उपलब्धियां विशेष उल्लेखनीय है, और इस बात में जरा भी अतिशयोक्ति नहीं कि वर्तमान समय में प्रगतिशील आन्दोलन पूर्व की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली स्वरुप धारण कर चुका है। किन्तु कोई भी संगठन जितना अधिक शक्तिशाली एवं सक्रिय होगा, उसकी जिम्मेदारियां और चुनौतियां भी उतनी ही अधिक बढ़ती जाती है। प्रगति के इस सोपान में पहुंच जाने पर प्रगतिशील रचनाकारों की चुनौतियां एवं जिम्मेदारियां भी बढ़ गई है। एक ओर अपनी एक जुटता, प्रतिबद्धता और गति को निरंतर बनाये रखने की जिम्मेदारी है तो दूसरी ओर राष्ट्रीय- अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से जुझने की चुनौतियां है।

राष्ट्रीय परिदृश्यों में देखें तो- मंहगाई, बेरोजगारी है ही, साथ ही आजादी के ३८ वर्षों बाद भी इस महादेश की जनता जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और सामंतवाद के जहरीले विचारों से मुक्त नहीं हो पाई है, बल्कि जातीय संगठन, साम्प्रदायिक संगठन, क्षेत्रीय संगठन के आधार पर राजनीतिक लाभ लेने देने की गलत प्रवृत्ति ने इन्हें और मजबूत होने में भरपूर मदद पहुंचाई है। परिणाम स्वरुप आजादी के बाद जिस राष्ट्रीय चेतना का विकास होना था, वह नहीं हो पाया। लोगों ने समस्याओं को जाति, क्षेत्र, सम्प्रदाय, धर्म आदि के आधार पर लेना शुरु कर दिया। अब इनका इस्तेमाल साम्राज्यवादियों पूंजीवादियों के द्वारा अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु किया जाने लगा है। यही वजह है कि आज देश में जगह- जगह जातिवाद, क्षेत्रवाद, अलगाववाद, सम्प्रदायवाद की लपटें उठने लगी है। लोगों में धार्मिक उन्माद बजाय कम होने के बढ़ता ही जा रहा है। साम्राज्यवादी पूंजीवादी इन्हें हवा देकर और भड़का रहे है। जिससे हमारी राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ जाये और उन्हें अपनी स्वार्थ सिद्धी का अवसर मिले।

यही नहीं हमारी जिन्दगी के सभी क्षेत्र सुनियोजित रुप से प्रदूषित किये जा रहें है। समाज में सामंती, पतनशील, परम्परावादी, पुनरोत्थानवादी, पूंजीवादी, उपभोक्ता संस्कृति का प्रचार- प्रसार, निष्ठावान कलाकारों एवं साहित्यकारों की पुरस्कार देने के नाम पर खरीद फरोख्त, क्षेत्र विशेष के नागरिकों के दिलो- दिमाग में पूरे देश के नागरिकों के प्रति दुश्मन होने का भाव भरना आदि षड़यंत्र किये जा रहे है।

अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में- परमाणु युद्ध, नक्षत्र युद्ध (स्टारवार) की विभिषिका बढ़ती ही जा रही है। विश्व शांति पर निरन्तर खतरा बढ़ता जा रहा है।

इन परिस्थितियों को तटस्थता या अनमने ढंग से लेना अपने युग की सच्चाई व समस्याओं से मुंह मोड़ना है। प्रगतिशील रचनाकार बड़ी सतर्कता एवं सूक्ष्म दृष्टि से इन परिस्थितियों को समझते हुये रचना के स्तर में लड़ाई लड़ रहा है- निरन्तर ! किन्तु इतने से ही काम नही चलेगा। हमें अपने संगठन को और मजबूत बनाना है, रचनात्मक धार और तेज करना है तथा मुंशी प्रेमचन्द और सज्जाद जहीर के घोषित उद्देश्यों को भी दृष्टि में रखना है। तभी प्रगतिशील आन्दोलन अपने लक्ष्य को सही माने में हासिल कर सकता है।

स्वर्ण जयंती वर्ष मे यही हमारी कामना है।

इस अंक में हम स्वर्ण जयंती समारोह की विस्तृत रपट दे रहे है। रपट पर सांवलाराम डाहरे ने काफी मेहनत किया है फिर भी कुछ बातों का छूट जाना संभव है। श्री रफीक खान का आलेख "लोक संस्कृति और कृषि के अन्तर्सम्बन्ध" तथा श्री रामकुमार रामरिया की कहानी "अनाथ जंगल" इस अंक में दे रहे है।

श्री जीवन यदु गीतकार के रूप में अच्छा स्थान बना चुके है। उनका एक गीत "लिखकर अपना नाम" शीर्षक दे रहे है साथ ही अन्य कवियों की कवितायें भी है। इस अंक में "अभी- अभी" तथा "विचार संदर्भ शिलालेख" नहीं दे रहे है। इनके स्थान पर 'मत/सम्मत' दे रहे है, जिसमें रचनाकारों, पाठकों एवं वरिष्ठ साथियों के पत्र छापेंगे 'इकाई समाचार' के अन्तर्गत समस्त इकाईयों की गतिविधियों की रपट हम छापेंगे। इकाई सचिवों से आग्रह है कि वे अपनी गतिविधियों की रपट यथा समय भेजें।

पिछले दिनों स्वर्ण जयंती समारोह में लखनऊ पधारे हुए पाकिस्तान के मशहुर तरक्की पसंद रचनाकार सैय्यद सिब्ते हसन की दिल्ली में अचानक मृत्यु हो गई थी। हम उनके दुःखद निधन पर अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

-दादूदयाल (सम्पादक)

प्रधान सम्पादक
नसीम आलम नारवी

सम्पादक
दादू दयाल

संपादक मंडल-
सांवलाराम डाहरे, कोमलसिंह शार्वा, शेखरचंद जैन

प्रबंध संपादक
चंदन सिंह ठोस, सुभाष चंद कुर्रे

(पृष्ठ १ का शेष)

की स्थापना की वहीं जीवन की सक्रियता का संदेश भी दिया। मीरा ने नारी की वेदना को अभिव्यक्ति देते हुए उसके उज्जवल पक्ष को चित्रित किया। सूर का काव्य लौकिक जीवन की आस्था और ग्राम्य परिवेश की सजीवता का काव्य है। जायसी ने अवधी जनजीवन के लोक संदर्भों को समेटते हुए जनता से अपने जुड़ाव को स्पष्ट किया। कबीर अपने समकालीन समाज का रूढ़ियों, अन्धविश्वासों और कर्मकाण्डों पर निर्मम प्रहार करते हैं। उनकी प्रखर सामाजिक चेतना ने उन्हें विसंगतियों से भरे सामंती समाज का विद्रोही बना दिया तुलसी का काव्यात्मक संघर्ष लोक मूल्यों का संघर्ष था। उन्होंने जनता की वेदना को बहुत गहराई से समझा था। अन्याय, उत्पीड़न और अत्याचार के विरुद्ध उन्होंने राम के आदर्श चरित्र को जनता के समक्ष रखा। इससे जनता को संघर्ष की प्रेरणा मिली। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि तुलसी संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे लेकिन उन्होंने अपनी काव्याभिव्यक्ति के लिये जिस भाषा का चयन किया वह लोक भाषा थी।

इस प्रकार भक्तियुग की काव्य चेतना ने अपनी लोकोन्मुखी दृष्टि के अन्तर्गत सामन्ती सामाजिक संरचना को कमजोर किया और लोक संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योग दिया। "सन्त साहित्य ने सिद्ध कर दिया कि जन-साधारण में कलात्मक विकास की कितनी शक्ति छिपी हुई है सन्त साहित्य ने सिद्ध कर दिया कि संस्कृति पर सामंतों और पुरोहितों का इजारा टूट गया है। सन्त साहित्य ने सिद्ध कर दिया कि यहां की जनसंस्कृति इतनी समर्थ है कि विभिन्न देशों और धर्मों के लोगों को अपने में मिला सकती है।"

(डा. रामविलास शर्मा : परम्परा का मूल्यांकन- पृ. ५६)

भक्तियुग के बाद पतनशील सामंतवादी शक्तियां पुनः सिर उठाती हैं और परिणामस्वरूप साहित्य में सामंती वर्ग की संस्कृति रीतिकालीन काव्य के रूप में सामने आती है। इस युग में कवि राज्याश्रय की ओर उन्मुख होते हैं और जनता से उनका कोई सम्पर्क नहीं रह जाता। फलतः कविता में लोकतत्व कमजोर पड़ जाता है और आचार्यत्व तथा चमत्कारवादी प्रवृत्तियां प्रमुख हो जाती है। आश्रयदाता की प्रशस्ति, सतही शृंगारिक वर्णन और नायिका की भेद सीमाओं में बंधकर कविता लोक संस्कृति से कट जाती हैं। फिर भी सामंती अभिरुचियों के इतर कुछ कवि लोक शक्तियों से जुड़कर रचनाकर्म करते रहे और उन्होंने अपनी सामर्थ्य और सीमाओं में ही सही, लोक संस्कृति को आगे बढ़ाने का काम किया।

भारत एक कृषिप्रधान देश है और लोकसंस्कृति ही उसकी पहचान है किन्तु कृषि का पुराना सामंतवादी रूप जो भक्तियुग और रीतियुग में जीवित रहा, आधुनिक भारत में विज्ञान और तकनालाजी के प्रसार के कारण परिवर्तित हो चुका है। कृषि सम्बन्धों में औद्योगिक क्रान्ति एवं पूंजीवाद के प्रवेश के कारण परिवर्तन हुआ हैं। कृषि क्षेत्र में इस क्रान्तिकारी बदलाव के साथ ही लोकसंस्कृति की पुरानी धारणा को बदले हुए परिवेश के अनुकूल ही समझा जा सकता है। लोकसंस्कृति में आये हुये इस बदलाव की यथार्थ पहचान जरुरी हैं। अन्यथा हम लोकसंस्कृति के विकासात्मक स्वरुप को समझ नहीं पायेंगे और दृष्टिहीन लोकसंस्कृति के यथास्थितिवाद की ही व्याख्या करते रह जायेंगे। उत्पादन शैली में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं उसी के प्रकाश में लोकसंस्कृति की व्याख्या की जानी चाहिये। अब कृषि पुराने तौर-तरीकों की मोहताज नहीं है। अब वह मात्र हल-बैल पर ही आश्रित नहीं है। वह बाइलों की बाट जोहने वाली स्थिति से उबर चुका है। अब उसे भाग्य का खेल या जुआ कहना असंगत होगा। बड़ी बड़ी कृषि योजनाओं के तहत-- नदियों पर बाँध बन रहे हैं और उनसे निकली नहरों के द्वारा खेतों को पानी पहुंचाया जा रहा है। इस प्रकार कृषि बड़े पैमाने पर आधुनिक उद्योग का एक अंग बन चुकी है। आधुनिक कृषि में लगे हुए श्रमिक अब सामंती ढर्रे की सोच से मुक्त हो रहे हैं। अंधविश्वासों, रूढ़ियों और पुरानी मान्यताओं में फलने-फूलनेवाली संस्कृति का लोप हो रहा हैं।

हमारे देश में औद्योगीकरण की तेज होती प्रक्रिया और कृषि के क्षेत्र में पूंजीवाद के प्रसार के बावजूद सामंती-वादी अर्थव्यवस्था अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में जीवित है। सामंतवादी शोषण के गहरे संकट ने किसानों को मजदूरों के निकट ला दिया है। दूसरी तरफ किसान बड़ी संख्या में मजदूर बनते जा रहे हैं। शहरीकरण की प्रक्रिया तेज हो रही है। इस प्रकार किसान मजदूर एकता के मार्ग प्रशस्त हो रहे हैं। और दोनों वर्ग अपनी एकता और पारस्परिक सहयोग से एक ऐसी लोकसंस्कृति की रचना कर रहे हैं जो विज्ञान और तकनालाजी की समरसता में निरंतर विकसित हो रही है जिसका मूल चरित्र सम्प्रदायमुक्त है। इसी लोकसंस्कृति को नई जनवादी संस्कृति के रुप में व्याख्यायित किया जा सकता है। इस जनवादी संस्कृति ने शहर और गांव के अंतर को कम कर दिया है। गांवों में आधुनिक जीवन दृष्टि का प्रवेश हो रहा है। किसान मजदूर की जिंदगी जनवादी संस्कृति वर्तमान सामाजिक ढांचे के विरुद्ध लामबद्ध हो रही है। वह समाज की अग्रगामी चेतना की संवाहक बन गई है और संस्कृति की रक्षा तथा विकास के लिये संघर्ष कर रही है। उसका

महत्व और क्षेत्र अब मात्र मनोरंजन के एक साधन के रुप में ही सीमित नहीं रह गया है, वह वर्गीय समाज में प्रभुता सम्पन्न वर्ग के विरुद्ध लड़ाई का एक अस्त्र बन चुकी है। लोकसंस्कृति अपने आधुनिक जनवादी स्वरुप में नवयुग की क्रियाशीलता के अनुरुप ढल रही है और जनता के लोक तांत्रिक संघर्ष को नई आकृति प्रदान कर रहीं हैं।

हिन्दी भाषा का चरित्र- निर्माण ही लोक- संस्कृति से हुआ है। डा. रामविलास शर्मा का यह कथन सही है कि हिन्दी की जननी संस्कृत नहीं है वह तो अपने समय के सामाजिक परिवर्तनों को व्यक्त करने वाली अनेक भाषाओं और बोलियों के सामूहिक उत्कर्ष की नवीनतम परिणति है कि जिसके बीज प्राकृतों में अपभ्रंश में और हिन्दी प्रदेश की तमाम बोलियों में बिखरे पड़े हैं। हिन्दा भाषा खड़ी बोली के रुप में अपने आधुनिक स्वरुप को प्राप्त कर चुकी है। खड़ी बोली में किसान- मजदूर की लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति हुई है। वह लोकजीवन की भावात्मक एकता का प्रतीक बन चुकी है। खड़ी बोली ने आधुनिक संस्कारों को समेटते हुए मध्ययुगीन मानसिकता, सामन्तवादी जीवन मूल्यों और साम्राज्यवादी साजिशों के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया है और संघर्षकामी– मुक्तिकामी जनता की चेतना को वाणी दी है। अतः लोकसंस्कृति से खड़ी बोली का सम्बन्ध अटूट है। लोक संस्कृति का आधुनिक स्परुप खड़ी बोली को माध्यम बनाकर जनवादी आकृति में ढल रहा है। इस प्रकार खड़ी बोली ने लोक संस्कृति को न केवल आगे बढ़ाया है बल्कि उसकी संघर्षमुखी चेतना के वर्तमान स्वरुप को निर्धारित भी किया है।

वर्गीय समाज में लोकसंस्कृति के समानांतर एक छद्म संस्कृति को फलने फूलने के अवसर प्राप्त होते हैं। पूंजीवादी समाज में इस तरह की संस्कृति का अर्थ अभिजात्य वर्ग के मानसिक विलास के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। चूंकि पूंजी– केन्द्रित समाज में कलाएं उपभोक्ता सामग्री के रुप में परिवर्तित हो जाती है, फलतः लोकसंस्कृति के भौतिक स्वरुप को विकृत करने, उसमें घालमेल करने और उसमें निहित संघर्ष चेतना को कुंठित करने की साजिशें सिर उठाने लगती हैं। जार्ज थामसन ने ठीक ही कहा है– "एकाधिकार पूंजीपतियों के लिये कला का उपयोग, एक मुट्ठी भर अभिजात समूह के लिये समय गुजारने के शगल से अधिक कुछ नहीं है। बाकी जनता के लिये बड़े- बड़े 'जन माध्यम' हैं जिन्हें वे मुनाफे के स्त्रोत और नैतिक, अध्यात्मिक भ्रष्टाचार फैलाने के साधन के रुप में शोषण के लिये प्रयुक्त करते हैं। यों इस बुराई के प्रभाव पूंजीवादी विश्व में हर जगह देखे जा सकते हैं। किन्तु उन देशों में सर्वाधिक रुप में जो अभी साम्राज्यवाद की गिरफ्त में हैं तथा जिनमें लोकसंस्कृति के पारस्परिक रूपों को योजनाबद्ध ढंग से नष्ट किया जा रहा है।"

आज हमारे समाज में लोक संस्कृति पर सामंतवादी, पूंजीवादी और साम्राज्यवादी षड़यंत्रों की काली छाया मंडरा रही है। देशी पूंजी से मिलकर साम्राज्यवादी पूंजी हमारी आत्मनिर्भरता और एकता में दरारें पैदा कर रही हैं। चूंकि पूंजी सामूहिक श्रम के शोषण से उत्पन्न होती है अतः राष्ट्रीय पूंजीवाद साम्राज्यवादी पूंजी के दबाव में कौमी एकता के विरुद्ध आचरण करने लगा है। इन्हीं साजिशों के तहत हमारे भौतिक परिवेश को सांस्कृतिक प्रदूषण के कुहारों से आच्छादित किया जा रहा है। संस्कृति के लोकबद्ध स्वरुप की उपेक्षा करके पश्चिम की अराजक स्वच्छंदता को पिछले द्वार से प्रवेश दिया जा रहा है।। एक छद्म संस्कृति को प्रश्रय देने, उसे प्रतिष्ठित करने की चालाकी से भरे षड़यंत्र हो रहे हैं। फैशन के तौर पर गजलें, डिस्कों नृत्य- संगीत और अश्लील गीत माहौल में गूंज रहे हैं। साहित्य के क्षेत्र में एक ओर बड़े घरानों की रंगीन पत्रिकाएं हैं जो तथाकथित आधुनिकतावादी फूहड़ता के माध्यम से समकालीन यथार्थ को जड़ बना रही है तो दूसरी तरफ सत्यकथाओं, जेबी किताबों और कामिक्स पुस्तिकाओं का मायाजाल है, जिनमें अपराध, अंधविश्वास और भाग्यवाद की भावनाओं को उकसाने को भरपूर सामग्री मौजूद होती है। रही सही कसर बम्बईया फिल्मों के माध्यम से पूरी हो रही हैं। आज की हिन्दी फिल्मों का मनुष्य सामान्य नहीं है। वह हीमेन, सुपरमेन और एंग्रीमेन है। इन फिल्मों का स्वर पलायनवादी है। इन्होंने जनता की अभिरूचियों को विकृत किया है।

लोकसंस्कृति के जनवादी स्वरुप को विकृत करने और जनता की विकासमान लोकचेतना की गति को अवरुद्ध करने की इन साजिशों के बावजूद लोकसंस्कृति की हिफाजत में जनवादी शक्तियां सक्रिय हैं और लोकशक्ति से ऊर्जा ग्रहण करता हुई इस सांस्कृतिक प्रदूषण का डटकर न केवल मुकाबला कर रही हैं बल्कि उनकी बेहतर काट भी प्रस्तुत कर रही हैं। डा. रामविलास शर्मा, नागार्जुन, शील, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, हरिशंकर परसाई, भीष्म साहनी, भैरवप्रसाद गुप्त अरुणकमल, स्वयंप्रकाश, असगर वजाहत इसराईल तथा अन्य बहुत से साहित्य कर्मी अपनी रचनाओं के माध्यम से लोकसंस्कृति की रक्षा के लिये प्रतिबद्ध होकर सांस्कृतिक विघटन की चुनौतियों का मुकाबला कर रहे हैं। इनकी रचनाओं में लोकजीवन का विस्तार और आगे बढ़ाने वाला रचनात्मक संघर्ष दिखाई देता है। 'पहल', 'उत्तरार्ध', 'उत्तरगाथा'

'सापेक्ष', 'धरती', 'कदम' और 'वसुधा' जैसी अनेक लघुपत्रिकाएं बड़े घराने की रंगीन पत्रिकाओं के लिये चुनौती बन गई है और विकल्पहीनता से ग्रस्त उनकी यथास्थितिवादी मनोवृत्ति का सटीक उत्तर दे रहीं हैं। ये लघुपत्रिकायें नई रचनाशीलता का ऐतिहासिक दस्तावेज है। बम्बईया फिल्मों की जड़ता के विरुद्ध गर्म हवा, गमन, आक्रोश, निशान्त, मृगया और अल्बर्ट पिन्टो को गुस्सा क्यों आता है जैसी फिल्में सार्थक पहल के रुप में उभरी हैं। नुक्कड़ नाटकों, जनगीतों और कविता-पोस्टर के लोकव्यापीकरण के माध्यम से जनसंस्कृति के नये आधार विकसित हो रहे हैं।

लेकिन इतना ही पर्याप्त नहीं है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इन कोशिशों को गति देने और उसे तेजतर बनाने की आवश्यकता हैं। आज के नाजुक दौर में संस्कृति- कर्मियों को इन गंभीर चुनौतियों का मुकाबला करना होगा और अपने दायित्व को समझना होगा। लोक संस्कृति की रक्षा का अर्थ है कि एक और तो साम्राज्यवादी- पूंजीवादी और सामन्त-वादी साजिशों का जमकर विरोध किया जाए तथा दूसरी ओर नई जनवादी लोक संस्कृति को एक लोकतांत्रिक राज-नीतिक परिप्रेक्ष्य दिया जाए। इसके साथ ही योजनाबद्ध ढंग से इस संस्कृति के सैद्धांतिक आधारों को स्पष्ट करना होगा। इसे जातीय स्तर पर मान्यता देकर इसके शैक्षणिक संस्कारों को पल्लवित करना होगा। इस तरह की लोक संस्कृति में ही हमारा इतिहास सुरक्षित है, हमारी परम्परा सुरक्षित है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी पहचान सुरक्षित है।

❀❀

शुभकामनायें-

❀ मेचींग सेन्टर ❀

न्यू मार्केट दल्ली राजहरा

जिला- दुर्ग (म. प्र.)

फेन्सी कपड़े, घड़ी व आभूषण के विक्रेता

आपका संतोष ही हमारा ध्येय है।

★ बुजुर्ग दोस्त बताता है ★

अपने बुजुर्ग दोस्त को सुनने की
बहुत होती हैं इच्छा
घन्टों- घन्टों तक.
अंगुलियां जैसे ओंठों को झाड़कर
जुबान से निकलती हो
दिनों- महीनों- सालों दूर
बहुत सारी घटनाएं,
बुजुर्ग दोस्त बताता हैं
-टांगे पसार कर.

बताता है बुजुर्ग दोस्त !
अपनी आखों की आतिशबाजी
अपने मुंह की ऊबासियाँ
अपने गले की खरखराहट
अपने हृदय में जमें हुए
धुएं की परतों को भी
कि- उड़ाते हैं
उड़ाने वाले कालिख,
चेहरा बचाओ- आत्मा के भीतर जाने से रोको.

हवा में तलाशो
कहीं होगा वह चेहरा
हवा उड़ाने जहर बोने वाला
बुजुर्ग दोस्त बताता है !
समेटो अनुभवों को
खोजो- ढूंढों
हो सके तो बनाओ रास्ता,
दूर नहीं है वह पहुंच से
पकड़ दिखाओ साले को
सभी चाहते हैं उसे देखना
बताता है बुजुर्ग दोस्त,
उसे देख लेने के बाद
चुप रहने चिल्लाने की बात छोड़ो
जो करना होगा
कर लेंगे लोग.

-कवष

[रपट]

प्रगतिशील लेखक महासंघ का स्वर्ण जयंती कार्यक्रम एवं चतुर्थ राष्ट्रीय महाधिवेशन

दिनांक ९ - १० एवं ११ अप्रेल को लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ का स्वर्ण जयंती कार्यक्रम एवं चतुर्थ राष्ट्रीय महाधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोह में देश-विदेश से लगभग ५०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया !

दिनांक ९ अप्रेल के, प्रथम दिन का कार्यक्रम रवीन्द्रालय चार बाग में प्रारभ हुआ । पहला सत्र ११.४५ बजे शुरु हुआ। राष्ट्रीय संगठन के महासचिव भीष्म साहनी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए अध्यक्ष मंडल के सदस्यों एवं वरिष्ठ प्रतिनिधियों को मंच पर आमंत्रित किया । जिसमें सर्वश्री गुलाम रब्बानी ताबां, कैफी आजमी, डॉ. मुल्कराज आनंद, अलीसरदार जाफरी, सैय्यद सिब्तेहसन, निरजन, डॉ. नामवर सिंह, सुजानसिंह के अलावा विदेशों से आये प्रतिनिधि भी शामिल थे ।

महासचिव भीष्म साहनी ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तदुपरान्त प्रतिनिधि सत्र में उन्होंने विभिन्न प्रांतों के महासचिवों को प्रतिवेदन प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया । सर्वप्रथम म. प्र. प्र. ले. सं. का प्रतिवेदन महासचिव की ओर से डॉ. मलय ने पढ़ कर सुनाया। राजस्थान प्र. ले. सं. के महासचिव श्री वेदव्यास, बिहार के महासचिव डॉ. खगेन्द्र ठाकुर के अतिरिक्त आंध्रप्रदेश से श्री सत्यनारायण, पजाब से श्री जे. एन. चन्द्र, पश्चिम बंगाल से श्री सौरी घटक असम से श्री केशव महंत, काश्मीर वे श्री शामलाल परदेशी, तमिलनाडु से श्री मालिक दिल्ली से श्री केवल गोस्वामी आदि ने भी अपना अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । आल इंडिया प्रोग्रेसिव उर्दू राइटर्स एशोसियेशन की गतिविधियों की जानकारी डॉ. कमर रईस ने दी। इसके साथ ही प्रथम सत्र समाप्त हुआ ।

द्वितीय सत्र ४.४५ बजे प्रारंभ हुआ। मंच पर सर्वश्री अमृतलाल नागर, डॉ. मुल्कराज आनंद, मन्मथ नाथ गुप्त, बाबा नागार्जुन, कफी आजमी, गुलाम रब्बानी तांबां अली सरदार जाफरी, डॉ. नामवर सिंह, सुजानसिंह हबीब तनवीर डॉ. श्यसेन्गो, सिब्ते हसन उदयरहमान, जमाल जुबैरी, हबीब बेगम रूक्कैया, आदि उपस्थित थे।

प्रारंभ में प्र. ले. सं. लखनऊ इकाई की कोषाध्यक्षा हाजरा बेगम ने अध्यक्ष मंडल के सदस्यों एवं विदेशों से पधारे प्रतिनिधियों का पुष्पहारों से स्वागत किया। स्वागत के पश्चात महासचिव भीष्म साहनी ने देश-विदेश के प्रसिद्ध साहित्यकारों, समालोचकों एवं राजनीतिज्ञों द्वारा प्रेषित शुभकामनाओं का पाठन किया। जिसमें प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी केन्द्रीय मंत्री श्री पी. व्ही. नरसिम्हा राव सी. पी. आई. महासचिव श्री राजेश्वर राव, सी. पी. आई. एम. महासचिव इ. एम. एस. नम्बूद्रीपाद, अच्युता मेनन, श्री आई. के. गुजराल, अरूणा आसफ अली, श्री बी. एन. पांडे (राज्यपाल उड़ीसा) एवं श्री रोमेशचन्द्र अध्यक्ष वर्ल्ड पीस कौन्सिल के अतिरिक्त सोवियत संघ, हंगरी एवं पोलैण्ड से भी शुभकामनायें प्रेषित की गई थी। साहित्यकारों में डॉ. रामविलास शर्मा, हरिशंकर परसाई, अमृता प्रीतम, विष्णु प्रभाकर, मन्मथ नाथ गुप्त, हीरेन मुखर्जी एवं गोपाल हालदार आदि ने भी अपनी शुभकामनायें दी थीं।

स्वागत भाषण श्री अमृतलाल नागर ने प्रस्तुत किया। उनकी आंख में तकलीफ होने के कारण उनका स्वागत भाषण अन्य साथी ने पढ़ कर सुनाया। स्वागत भाषण के पश्चात डॉ. मुल्कराज आनंद ने उद्घाटन भाषण देते हुए कहा– मुझे इस समारोह में ५०० रचनाकारों को देखकर काफी खुशी हो रही है। आज से ५० साल पूर्व इसी लखनऊ शहर में प्रगतिशील लेखक संघक संघ का गठन मात्र २०-२५ साथियों ने मिल कर किया था। मैने सोचा भी नहीं था कि इसका इतना विकास हो जावेगा।

डॉ. आनंद के भाषण के दौरान एक दुर्घटना हो गई। डॉ. आनद अपने वक्तव्य की समाप्ति के साथ ही अचानक बेहोश होकर गिर पड़। उन्हें तत्काल अस्पताल पहुचाया गया। इसके साथ ही कार्यक्रम के सचालक श्री गीदम साहनी ने सत्र समाप्ति की घोषणा कर दी। रात में ८ बजे डॉ. आनंद के स्वास्थ्य में सुधार की खबर आने के साथ ही लोक

गीत एवं नृत्य का कार्यक्रम शुरु हुआ । जिसमें बुन्देलखंड का बधाई नृत्य गढ़वाल का ताहिरा नृत्य, ख्याल लावणी तथा पूर्वी उ. प्र. इलहाबाद, के होली एव चैती गीत प्रस्तुत किया गया ।

दिनांक १०–४-८६ को दूसरे दिन का कार्यक्रम प्रात: १० बजे प्रारंभ हुआ । अध्यक्ष मंडल में सर्वश्री गुलाम रब्बानी ताबां, न गार्जुन, मन्मथ नाथ गुप्त, डॉ. नामवरसिंह, अली सरदार जाफरी, जयकान्तन, सुदर्शन चक्र, सुजानसिंह सिब्ते हसन एवं कैफी आजमी आदि प्रमुख रुप से थे । कार्यक्रम का सचालन भीष्म साहनी ने किया । स्वर्ण जयंती एवं चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन में पधारे हुए देश- विदेश के प्रतिनिधियों ने अपने अपने विचार रखे ।

लंदन से आये हुए रचनाकार श्री अ सुर काजमी ने कहा– 'हमे सबसे पहले अपनी अन्दरुनी कमजोरियों का जायजा लेना चाहिए । हम अपने दिल को टटोले कि हममें भेदभाव तो नहीं है । लंदन में हिन्दी, उर्दू एवं अंग्रजी की लगभग ६० किताबें छापी जा रही है । हमें अन्य भाषाओं की रचनायें आप लोग दीजिए । हम अपनी भाषा में अनुवाद करके तीसरी दुनिया में पहुँचाने की कोशिश करेंगे ।"

जुमाल जुबैरी (कनाडा) ने कहा– "आप लोग अपने किये तजुर्बे को अली सरदार जाफरी के माध्यम से हम तक पहुँचाये । हम अपने यहां के अखबारों में छापेंगे, जिससे कि तीसरी दुनिया में असर होगा । मुंशी प्रेमचंद और सज्जाद जहीर ने जो पौधा लगाया है, वह अमरीका एवं अन्य देशों में फैल रहा है । मात्र फलने की देरी है ।"

– सोवियत दूतावास के कौंशलर श्री शेख साहब ने रुसी जनता का संदेश सुनाया ।

– सिब्ते हसन (पाकिस्तान) ने अपने विचार रखते हुए कहा– "पाकिस्तान में जो तरक्की पसंद लोग है । उनकी ओर से आप लोगों के लिए पैगाम लाया हूँ । वहां जिन्दगी और मौत का सवाल है । रोशनी और तारीकी का सवाल है । सज्जाद जहीर और फैज अहमद फैज ने वहां ६ साल जेल में गुजारे हैं । पाकिस्तान में जो सही निकले उनका नाम आयेगा । जिसके हृदय में इंसाफ और मोहब्बत होती है वह कभी नहीं मरता । जुबान का मसला हर मुल्क में होता है । वहां तरह- तरह के मसले हैं । हमारे दुश्मन अखबार तो यहां से भी ज्यादा है । हमारा मसला नजरियात का है । जुबान का नहीं । हमारा मसला मानव मूल्य का है । तरक्की का है । हमारा मसला यह नहीं है कि इधर से लिखी जा रही है या उधर से । हम अपना खयालात किस तरह पेश करें यही हमारा मसला है ।

– पाकिस्तान प्र. ले. सं. के जनरल सेक्रेटरी मो. सलीम ने मजनूह गोरखपुरी (करांची) का संदेश सुनाते हुए कहा– "खुद बढ़े और छोटों को भी बढ़ाये । जो लोग इंसान से इंसान को जुदा करते हैं वे इसान नहीं होते ।

– बेगम रुक्कैया (प. बंगाल) ने कहा– "हर आदमी का दुख सुख एक होता है । हम आप लोगों के साथ है ।"

– चेयरमेन जनाब गुलाब रब्बानी तावां ने कहा– "हम आज रहनुमाओं एवं साथियों की याद आ रही है, जिन्होंने, प्र. ले. संघ को प्रगति में अपनी जिन्दगी समाप्त समाप्त कर दिया है । पर जो आते है वे जाते ही ही है । लेकिन चिराग बुझते हैं, रोशनी कभी नहीं बुझती । इधर हम पर बेबुनियादी आरोप लगाये जाते हैं । आजादी हमारे लिए किसी की इनायत नहीं बल्कि हमारा हक है । जिसकी आंखों पर परदे हों वह कैसे ठीक हो सकता है । हमें नौजवानों को आगे लाना है ।"

दोपहर १२.३० बजे इसी सत्र में प्र. ले. सं. के पचास वर्ष पर परिसंवाद हुआ । जिसका संचालन श्री ए. पी. मालिक (आंध्र प्रदेश) ने किया । प्रमुख प्रवक्ता के रुप में डॉ. नामवर सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा- हमारे सामने आज दो मुख्य बातें हैं– (१) हम सिर्फ अपनी पीठ ठोंकने रह जाये या फिर (२) लोगों के सामने हम अपनी छाती पीटते रह जाये । आज हमारे लिये परीक्षा की घड़ी है । भक्ति आन्दोलन के ४०० साल बाद आज प्रगतिशील आन्दोलन बढ़ा है । प्रगतिशील लेखक संघ अखिल भारतीय होने के नाते एक महत्वपूर्ण आन्दोलन है । भक्ति आंदोलन और प्रगतिशील आन्दोलन में फर्क है । भक्ति काल का ढाँचा धार्मिक था । जो इस दुनिया का नहीं । उस दुनिया का था । जबकि प्रगतिशील आन्दोलन इसी दुनिया का है । प्रगतिशील आन्दोलन उ. प्र. के इसी लखनऊ से शुरु हुआ । १८५७ की लड़ाई इसी इलाके से शुरु हुई । १९३६ में प्रगतिशील आंदोलन शुरु हुआ । १९३६ के आसपास ही किसान आंदोलन भी इसी इलाके से शुरु हुआ । जिसने प्रगतिशील आंदोलन को प्रभावित किया । लखनऊ के बाद कलकत्ता, दिल्ली और बम्बई में भी प्र. ले. सं. की स्थापना हुई । प्रत्येक प्रतिष्ठित व्यक्ति किसी न किसी रुप में प्रगतिशील थे ।

आजादी लड़ाई में प्रगतिशील रचनाकारों ने कुर्बानी दी है ।

संगठन का काम हैरावल दस्ते की भूमिका अदा करना होता है । १९३६ की तरह १९८६ में खतरा बढ़ गया है ।

उस समय भी धर्म और मजहब के नाम पर खतरा था जो आज भी है। अगर हम भाषा, धर्म और क्षेत्र के नाम पर लड़ेंगे तो आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। १९३६ में पहली चुनौती साम्राज्यवाद की थी जो आज भी है। आज निर्मल वर्मा प्रगतिशील लेखक संघ और सोवियत संघ के विरोध में लिखता है लेकिन अमरीका के विरोध में एक पंक्ति भी नहीं लिखता। आम जनता के नब्ज को पकड़ कर लिखा जावेगा वही साहित्य ऐतिहासिक होगा। दूसरा नहीं।।

पाकिस्तान के तरक्की पसंद लेखक मो. अली ने अपना संदेश प्रस्तुत किया। उसके साथ ही प्रथम सत्र समाप्त हुआ।

दूसरा सत्र ३.४५ बजे प्रारंभ हुआ। अध्यक्ष मंडल में डां. रिजवी जयकान्तन, सौरी घटक, सिद्दीकी, केदारनाथसिंह एवं अली सरदार जाफरी थे। अली सरदार जाफरी ने अपने विचार रखते हुए कहां– "हमें जुबान के मसले में फंसना नहीं है। मैं यह बिल्कुल नहीं मानता कि एक भाषा से दूसरी भाषा बड़ी नहीं है।"

श्री जयकान्तन (तमिल), श्री देवेशराय (बंगला), श्री अमरकान्त (हिन्दी) एवं श्री कमर रईस ने अपने अपने विचार रखे।

अपरान्ह ३ बजे से ६ बजे तक दो सत्रों में परिसंवाद होना था। किन्तु समय भाव के कारण ६.३० बजे से परिसंवाद की एक साथ दो गोष्ठियां रखी गई। मैंने "युवा लेखन की समस्याएँ" परिसंवाद में हिस्सा लिया। कार्यक्रम के अध्यक्ष थे सर्वश्री कैफी आजमी एवं भीष्म साहनी। संचालन डॉ. काशीनाथ सिंह ने किया।

'युवा लेखन की समस्यायें" पर दो रचनाकारों सर्वश्री डॉ. कर्णसिंह चौहान एवं डॉ. अली अहमद फातमी ने आलेख तैयार किया था। परन्तु दोनो की अनपस्थिति के फलस्वरुप बिना आलेख पठन की चर्चा की गई। जिसमें जितेन्द्र रघुवंशी (आगरा) और अब्दुल बिस्मिल्लाह (दिल्ली) ने भाग लिया। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने कहा– "युवा लेखकों और वरिष्ठ लेखकों को अलग करके नहीं देखना चाहिए। दोनों का एक ही मंच होना चाहिए। हम युवा लेखकों को राष्ट्रीय चेतना का विकास करना चाहिए।"

– अरुण कमल (पटना) ने कहा– "नये लेखक और पुराने लेखक की समस्या एक होती है। नये लेखक में मात्र दृष्टिकोण का अभाव होता है। नये लेखक के पास परम्परा की समस्या है। प्रकाशन की समस्या है। एवं जीवन की जटिलता को समझने की समस्या है।

– श्री अली जावेद (दिल्ली) ने विचार रखा कि:– १९३६ के हालात से आज के हालात में खतरा अधिक है; क्योंकि उस समय हमें मालूम था कि हमारे दुश्मन कौन हैं। लेकिन आज दुश्मन के तरह - तरह के रुप रंग है जिसे युवा लेखकों को समझने की समस्या है।"

श्री चन्दनसिंह (बंगाल) और श्री बशीर ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अध्यक्ष कैफी आजमी ने कहा– "आज जोश से काम नहीं चलेगा। आज तो हमें होश से काम करना है। आप लोग मेरी पीढ़ी के लेखकों से आगे बढ़ जाओ। जहां पर हम अपना काम खत्म करते हैं वहां से आप लोगों को आगे बढ़ना है।

समयाभाव के कारण आगे की चर्चा नहीं हो पाई। दूसरी गोष्ठी में आधुनिक भारतीय साहित्य में प्रगतिशीलता की अवधारणा पर डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, जयकान्तन एवं ए. पी. मालिक ने आलेख पढ़े।" रात्रि ८ बजे श्री हबीब तनवीर द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक "हिरमा की अमर कहानी' का मंचन किया गया। मंचन के पूर्व रवीन्द्रालय सभागार में जैसे ही डॉ. मुल्कराज आनंद ने स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त प्रवेश किया साथियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया। डॉ. "मुल्कराज आनंद" जिन्दाबाद के नारे भी हॉल के अंदर गूंज उठे।

तीसरे दिन का कार्यक्रम दिनांक ११.४८६ को सुबह ९.३० बजे प्रारंभ हुआ। "युवालेखन की समस्याएँ" परिसंवाद को पुनः आगे बढ़ाया गया। अध्यक्ष थे प्रिंसिपल सुजानसिंह एवं भीष्म साहनी। संचालन किया श्री अली जावेद (दिल्ली) ने।

चर्चा की शुरुआत करते हुए श्री सतीश (बिहार) ने कहा– "नयें लेखकों को भाषा की बुनियादी जानकारी होनी चाहिए।" चर्चा में मुक्तिकुमार नैनकुमार (भोजपुर बिहार) क्रांति घोड़ा (जोधपुर), हरभजनसिंह, वीरेन्द्र कुमार, तथा रमेश वर्मा (सीधी), अपूर्वानन्द (बिहार), रमाजी (कंकरौली) आदि ने भी अपने विचार रखें।

इसी बीच प्रथम सत्र प्रारंभ हो गया था। संचालन डां. कमर रईस ने किया। इस सत्र में डॉ. असगर अली इंजिनियर और डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने "लेखक और आज की चुनौतियां" विषय पर आलेख पढ़े। डां. इंजीनियर ने अंग्रेजी में अपना आलेख पढ़ते हुए कहा– प्रगतिशील लेखकों

को विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध रहना चाहिए। तभी हम विचारों का स्वस्थ माहौल पैदा कर सकते हैं। हमें अपनी संस्कृति की ईमानदारी से आलोचना करनी चाहिए। ईमानदार विचार समकालीन लेखक के लिये बहुत आवश्यक चीज है। प्रगतिशील लेखकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि लोगों तक जानकारी और ज्ञान पहुंचाने वाले तीनों शक्तिशाली माध्यम रेडियों, दूरदर्शन, और अखबार सत्ता वर्ग तथा निहित स्वार्थी के हाथों में हैं। जो इनका भरपूर दुरुपयोग कर रहे हैं। दूरदर्शन के राष्ट्रीय कार्यक्रम में मनोरंजन के नाम पर लोगों को जहर दिया जा रहा है। य कार्यक्रम उन बहुराष्ट्रीय या अन्य कंपनियों के द्वारा आयोजित होते हैं जिनके लिए हमारी समस्यायें या संवेदनशीलता का कोई महत्व नहीं है बल्कि उनके नीजी स्वार्थ ही उनके लिए अहमियत रखते हैं। आज भारत ही नहीं खासकर तीसरी दुनिया के देशों में महिलाओ पर अत्याचार, धर्मान्धता, साम्प्रदायिकता और जातिवाद की समस्यायें उठ रही है। हमें इन चुनौतियों का अपने लेखन के जरियें मुकाबला करना होगा।"

परिसंवाद के दूसरे वक्ता डॉ विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा- प्रगतिशील साहित्य को लोक सम्पर्क के जरिये निरक्षर आम मजदूर और किसान तक पहुँचाने की आवश्यकता है। आज शाश्वत साहित्य की नहीं जन साहित्य की जरुरत है।"

दोनों आलेख पर चर्चा को आगे बढ़ाते हुए- फहमीदा रियाज (पाकिस्तान) ने कहा- "तरक्की पसंद लोग मायूस नहीं होते हैं।"

भाऊ समर्थ (नागपुर) ने कहा- हमारा सपना ऊंचा होना चाहिए। पुरस्कार एवार्ड देने के पीछे पूंजीवादी लोगों का स्वार्थ होता है। हमारो लड़ाई नब्बे प्रतिशत लोगों के हित के लिए है। दस प्रतिशत के लिए नहीं। पूंजीवादी लोगों के दांव पेंच बताने वाले साहित्य ही सच्चे साहित्य होंगे।"

सिब्तेहसन (पाकिस्तान) ने कहा- "आज सबसे बड़ा मसला जंग और अमन का है। दुनिया तबाही के दहाने पर खड़ी है और हम छोटी छोटी समस्याओं पर उलझे हैं। हमें सुई की नोक पर बैठने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अमन के खातिर देश- विदेश के लेखकों का सम्मेलन बुलाया जावे और विश्वशांति पर विचार किया जाना चाहिए।"
पुरुषोत्तम अग्रवाल (दिल्ली) ने कहा- यथार्थ को कैसे देख रहे हैं, कहां खड़े होकर देख रहे हैं। इसको समझ लेना निहायत जरुरी है।"

- गंग प्रसाद मिश्र (लखनऊ) ने कहा- "लेखक पर बहुत सी चुनोतियां और जिम्मेदारिया डाली गई है। पर आप उस लेखक के दर्द को समझिये जो बहुत कुछ ईमानदारी से लिखने के बावजूद इसलिए अनजाना रह जाता है क्योंकि वह प्रकाशक नहीं ढूंढ पाता। संगठन के लेखकों की कृतियों के प्रकाशन की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

- सुदर्शन चक्र का कहना था कि- "मेरा साहित्य मेरे बाद भी जन संघर्ष में जुटे लोगों को प्रेरणा देता रहेगा।"

इरीना मैक्समैण्डो (सोवियत रुस) ने कहा- "भारतीय साहित्य रुस में बहुत लोकप्रिय है और लाखों की संख्या में छपता बिकता है। हमारे देश में ४३० लाख हिन्स्तानी साहित्य के अनुवाद हो चुके हैं। रवीन्द्र, कृष्ण चन्दर, सज्जाद जहीर, प्रेमचद के सात लाख शायरी तथा रवीन्द्र की बीस लाख से अधिक किताबें छप चुकी हैं। हमारे देश में सभी भाषा मौजूद है।"

इनके अतिरिक्त कृपालसिंह (गजियाबाद) बुद्धेश्वरनाथ (बिहार) हेमेन्द्र कुमार दत्ता (असम) ने भी बहस में भाग लिया।

अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष कैफी आजमी ने कहा - मैं उन सभी साथियों को शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने इस समारोह के आयोजन में मदद की है। अतहर नबी, वीरेन्द्र तथा राकेश ने भरपूर सहयोग दिया है।" इसके साथ ही यह सत्र समाप्त हुआ। दोपहर दो बजे से चार बजे तक संगठन का चुनाव और प्रस्ताव पर चर्चा हुई। अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक महासंघ के अध्यक्ष पद हेतु जनाब गुलाम रब्बानी तावां को पुनः चुना गया। महासचिव पद हेतु राजीव सक्सेना (दिल्ली) का चयन किया गया। इसके पहले के महासचिव भीष्म साहनी को एफ्रो एशियाई प्रोग्रेसिव राइटर्स एशोसियेशन हेतु लिया गया। इसके अतिरिक्त एक मंडल एवं सचिव मंडल का भी चयन किया गया। इस दरान बहुत से प्रस्ताव पारित किये गये। इसी समय उर्दू को दूसरी सरकारी भाषा बनाये जाने के संबंध में डॉ. कमला प्रसाद (भोपाल) के बयान को प्रस्ताव में बदलने के लिए अफसाना निगार, इकबाल मजीद, और अतहर नबी ने जोर दिया। लेकिन सरदार अली जाफरी ने कहा- "इस बयान का मैं विरोध करता हूँ। इस बयान को वापस ले लिया जाय और एक आयोग का गठन किया जाय जिसमें हर भाषा के दो- दो प्रतिनिधि हों जो ६ माह के अंदर भाषा के मसले पर अपना रिपोर्ट दें। जिस पर हम अगले सम्मेलन मे विचार करें।" डॉ. नामवर सिंह ने अली सरदार जाफरी

(शेष पृष्ठ १४ पर)

'अनाथ जंगल'

❀❀ रामकुमार रामरिया

पेट की चिंता रात- बिरात नहीं देखती। कलुआ (और मलुआ दोनों भाइयों) की अगुआई में बीजगांव के सात आदमी रोजी के गुन्तारे बुनते गांव के बाहर धूनी जगाए बैठे हैं। एक तो घना अंधेरा, ऊपर से जंगल की घमासान सांय सांय। ऐसे अपारदर्शी जंगल की तराई में गांव बसाने वालों का कलेजा दूसरी ही मिट्टी का बना होता है, उन्हें किसका डर ? अलाव में आग धधकती रहे और हाथ भर की मूंठ में पैठी हुई छः अंगुल की टंगिया कंधे पर टंगी रहें बस। वनवासियों की पता नहीं कितनी पीढ़ियां इन दोनों हथियारों के सहारे गुजर गई है। उनकी आंखों में न कहीं कोई खतरा है, न दिल में कोई डर। एक चिलम हाथ में आई और कमर से गांजा तम्बाखू की पुटली खुल गई, कस दो कस चिलम इस छोर से उस छोर तक प्रेम से खींची गई, फिर पीठ पर अस-बाब लादा और दुनियादारी में निकल गये, पीछे छूट जाती है.. गोडों को गर्मी देकर धीरे- धीरे ठंडी होती अलाव की आग।

कलुआ ने एक लुघड़ा को बांस की कमची से कुरेदकर तोड़ा और मुट्ठी की चिलम को मुंह से लगाकर खींचा, धुए को मुंह में रखकर कपड़ा हटाकर चिलम ठंडी की और कंकर सहित उसे पुटली में बांध लिया। तब तक अलाव की आग नींद की गोद में जाते हुये शिशु की तरह, मुंदती हुई आंखों को खोलकर निदिया गई। कलुआ उठ खड़ा हुआ। उसके उठते ही मलुआ, भोंटू, लूला और तीन नये लड़के भी खड़ें हो गये। बांस के टोकन, सूपे, बिजने, टिपारी, मचला-दौरी आदि की कामरे बाए कंधे में और टंगिए दाए कंधे मे आ गई, कमर में पेट तथा बंधे बैलों और बोदों की पूंछ के बालों के सोंटे थे सो अलग। एक रहस्यमय यात्रा शुरु हो गई। न पावों में आहट, न मशालों की रोशनी... कलुआ की कामर की चूंचूं के पीछे बाकी लोगों की कामरे चुंचआतीं चल पड़ी।

बीजगांव का बांसों का जंगल पीछे छूटता चला गया। सामने आसमान से हाथ टिकाकर दैत्य की तरह रास्ते में खड़ा है, चिरईडोंगरी का साल सागौन का जंगल। मगर कलुआ और मलुआ की टोली को इससे क्या ? रास्ते में खड़ें दैत्यों को देखो ही मत छोटा है तो कूद जाओ, बड़ा है तो पांव के नीचे से बुलक जाओ, सो सर झुकाए वे उस काले जंगल की अदृश्य र्‌हस्यान पर सिर्फ चिचियाती कामरों के इशारों पर चल पड़े। आखिर वह जंगल भी छूटा। सातों लोग कच्ची राहदानों पर चढ़ गये, मगर चलते रहे वे किनारे की मुरमीली मिट्टी पर ही। सड़क की डामर को उन्होंने छुआ ही नहीं, उनके दोनों ओर है मंझोली पहाड़ियों की पहेरेदारियां... जानवरों के खटके..... और प्रतिरक्षा में कांधे पर टंगिए के साथ टंगा और सोंटे के साथ कमर में बंधा आत्मविश्वास। जंगल की यह यात्रा बस एक किलोमीटर और बाकी थी। फिर जामगांव रेल्वे क्रासिंग जहां से नैनपुर का रास्ता एकदम साफ, छुटपुट नाटे कद की पलास की झुरमुटियां हैं.. सो उनका कोई आतंक नहीं.. किनारे किनारे नैनपुर की हद में घुसने की ही बात हैं बस, बाहर ही अग्रवाल वन- वित्यास है। वहां पहुँचे तो जैसे मंदिर में पहुँच गये... सैकड़ों अपराध माफ... पतित– पावनी में नहा लिये समझेगें... डर है तो इसी डेढ़- मील का... कोई भी जीप, जंगल का कोई अफसर, नाकेदार, दफेदार, फारेस्ट गार्ड... कोई भी मुसीबत टपक सकती है। मगर कलुआ ने कह रखा है– "खबरदार, पहले से कोई न डरे... जब मुसीबत सर पर आ जाये तब कामरे फेक कर भाग जाओ... बगर जाओ... कलुआ और मलुआ सब देख लेंगे। तुम घर- गांव पहुँचकर काम धंधे से लग जाओ।" यह सब तय है तो डर किसी के मन में नहीं है... सहसा कलुआ की कामर मद्धिम पड़ गई। सब चौकन्ने हो गये। जरूर खतरा है। कलुआ अपने लिये कभी ढीला नहीं पड़ता, कांटे चुभ जाए, चाहे सांप लिपट जाए जामगांव रेल्वे क्रासिंग के पहले कलुआ कभी रुकता नहीं ! खतरा है... जरुर खतरा है ! सबके कन्धे ढीले पड़ गये और पंजे कामरों की कमची पर कस गये। इशारा हुआ कि सब कुछ फेंककर भागना ही है। जानवर का कोई डर नहीं है... उससे तो आंख मिलाई और निकल गये। कलुआ बड़ा वीर और अनुभवी है, शेर तेंदुऐ भालू... सब से निपट चुका है वह. शेर तेंदुऐ भालू तो आदमी से डरते हैं... सबको अपनी जान प्यारी है। जब तक उन्हें छेड़ों नहीं, वे किसी का नुकसान नहीं करते, हिम्मत से उसे देखते रहो बस। वह आप दुबक जायेगा तुम आगे निकल जाओ. अगर रेढ़े और जंगली सुअर हों तो आड़े तिरछे भागो। वह तो भेड़ियाधसान है.. भागेगा एक सीध में... इधर उधर होना उसकी अक्ल के बाहर की चीज है... तो जानवरों का भय किसी को नहीं था। एक ही खतरा उनके दिमाग में तन रहा था... आदमी... जंगल विभाग का आदमी ? इस मुसीबत से बचने की तैयारी लबने कर ली है। उधर से कलुआ का इशारा हुआ और इधर से पीछे पीछे ही सब दौड़ पड़ेंगे, कलुआ ने कह रखा है पकड़ में कोई न आये। वो लोग पागल कुत्ते हैं, पता नहीं किससे चिढ़े बैठे हैं.. सबका गुस्सा निकालते हैं हम गरीबों, असहायों पर... जिस

प्रकार पटवारी और पटेल से अपमानित होकर किसान सीधे साधे बैलों को पीटता है.. वैसे ही इनके हाथ हम पर चलते हैं। यह बात याद आते ही आने वाली मुसीबत के ख्याल से सबकी छाती धड़कने लगी। बचने के सौ उपाय हैं, जब बचने की कोशिश की जायेगी तो मुसीबत का पता ही नहीं चलेगा.. मगर मुसीबत की पूर्व चिंता मुक्ति के उपाय के पहले हाथे- पांव कंपा देती है। कांपते हुए वे लोग कलुआ की आवाज का इंतजार करने लगे। तब तक सामने दो अंगारे दहक उठे। जानवर है कोई शायद... शेर ही होगा, वही इस जंगल में बहुतों को मिला है... सबके हाथ टंगिए पर चले गये। डरने की कोई बात नहीं ज्यादा आदमी देखकर वह वैसे ही दुबक जायेगा। लेकिन तभी कलुआ चिल्लाया "जंगल का आदमी है... भागो।" सबने कामरे फेंक दी... और इधर उधर भागने लगे। एक भारी आवाज पीछे से आयी, "भागते कहां हो सालों... चारो तरफ से घेर लिये गये हो... तुम्हारे बाप का ही तो जंगल है... आओ... तुम्हारी माँ को..." मगर इसकी तरफ ध्यान किसी ने नहीं दिया... पहले जान बचाओ... चोरी में सीनाजोरी नहीं चलती। कौन तुम्हारे पीछे भागकर आता है ? बांस ही की तो चोरी की है, सोना की चोरी नहीं है... तुम्हारा भी क्या जाता है। हफ्तेभर मेहनत ही तो. बांस मुफ्त के है, जाने दो चमड़ी बचा लो.- पकड़े गये तो बेहाल होकर हफ्ते दो हफ्ते घर में बदन सेंकवाते पड़े रहोगे... सो जिसके जिधर पांव उठे भाग पड़ा.. पीछे पीछे कोई दो जोड़ी पांव दौड़ने लगे। मगर दो जोड़ी पांव चौदह जोड़ी तितर बितर पांवों में से किसके किसके पीछे भागेगें। बस, आधा फलांग इधर उधर भागकर, चकमा देकर सभी को एक हो जाना है... छूछे हाथ घर लौटने के लिए.. रात खराब, मेहनत खराब और पेट खाली के खाली। अब की बार सेठ की बात बिल्कुल नहीं मानी जायेगी। कलुआ ने अंधेरे में खेतों की मेड़ पार करते करने तय कर लिया। सेठ से कह दिया जायेगा कि तुम्हें सामान चाहिये तो ट्रकों पर लादकर ले जाओ। हम गरीबों को क्यों मरवाते हो... तुम्हारे ट्रकों को कोई नहीं पकड़ता... हम लोगों को हर तीसरी चौथी फेरी में अपने मालों से हाथ धोना पड़ता है.. तुम पेशगी भी नहीं देते और पकड़े गये माल की हानि को भी नहीं जानते.. हमी मुफ्त में यह मुसीबत क्यों मोल लेते रहें। यह आप ठगाई अब नही होगी। कलुआ ने यह तय कर लिया सो तय कर लिया।

अब, कलुआ के तय किये ही सब कुछ थोड़े ही तय होना है। कलुआ ने कितनी दुनिया देखी है भला ? बीजगांव से नैनपुर या जिला कचहरी मण्डला तक ही तो ? हाँ साहस और वीरता में उसकी बरा– बरी की कोई बिसात नहीं ! शेर– चीतों से लेकर सांप बिच्छू सब के मंत्र उसे आते हैं। मगर आदमी का मंत्र वह कहाँ जानता है। वहाँ गाँव की वीरता काम नहीं आती, इसलिये भागता है वह ! भागकर इकट्ठा होने की जो जगह तय है वहां वह पहुंचा तो देखा आदमी की काट काम कर गयी है। उसने देखा सब लोग नहीं पहुंच पाये हैं। वह चौक गया ! ऐसा तो कभी नहीं। आशंका से उसका मन कांप गया... भयभीत आवाज में बोला ! "काये, लूला और भैंगा नई दिख रय ?" ओन्हें बान्ने पकड़ लई। "भैंगा के छोटे भाई ने लगभग रुआंसा होकर उनके पकड़े जाने का की सूचना दी। सुनकर कलुआ को चुप्पी लग गई समझ ही नहीं पाया कि यह क्या अनहोनी इस बार हो रही है। साल भर हो गये, जंगल वालों ने किसी को नहीं पकड़ा है। उनकी मर्जी पकड़ने की कमी नहीं रही। माल छीन लेते रहें है बस।

बड्डो, बिनका का होहे ? मर जैहें वे तो "रंगी ने अपने भइयां की चिंता करते हुयें पूछा ! कलूआ ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर कंधे से टंगिया उतार ली और आदेश के स्वर में बोला– तुम सब गांव चलो मैं देखता हूं।'

"नहीं बड्डों..." कलुआ के भाई मलुआ ने कहा– हम सब चलते है।।

!सबका जाना ठीक नहीं है। कलुआ ने बरजा– "वे दो हैं मैं काफी हूँ"

"मेरी बात मानो, सरपंच की मदद ले लो। सरकार से जीतने का काम वहीं करेंगे। अभी तक चुप भोंदू ने सुझाया। सब लोग चुप हो गये। बात सही है, मार पीट गाली गुफ्तार से मामला बिगड़ सकता है जब तक नहीं पकड़े गये तब तक सीना जोरी ठीक है, पकड़े गये तो गुनहगार हुये। फिर तो मनौतियां- चिरोरियां ही ठीक है कोई नेता ऊता, सेठ- मालगुजार तो है नहीं कि पैसा फेंका और दस लात सरकार को जमाकर छूट गये। कलुआ ने तय कर कि सरपचजो की मदद ले ली जायेगी। मगर रंगी ने उबलकर पूछा कि सरपंच क्या मदद करेगे। सरपंच भी तो आखिरकार सरकार है।

कलुआ ने जब दांत पीसकर कहा– "सरपंच अगर सरकार है तो हमारे बाद है। गांव हमारा है... हमारे दम पर सरपंच है... न मदद करे तब सारा गांव बाहर निकल आयेगा।"

कलुआ की बातें जोश भरी हैं। उसे गांव वालों की एकता पर अटूट विश्वास है। सरपंच पर भी उसे विश्वास है– वे ऐसे ओछे व्यक्ति नहीं हैं, हमारी तकलीफें जानते हैं। कलुआ लौटने लगा तो रंगी ने एक नैतिक सवाल उसके पांव में डाल दिया– बड्डो हमारे दो आदमी साहबों के हाथों में हैं, उनकी चमड़ी छिल रही होगी, क्या हमारा लौटना उचित है ?"

कलुआ ने इस पांव पड़े सवाल को ठुकराया नहीं, उस सवाल के घुटनों पर लगी धूल की सफाई करते हुये बोला– रंगी, हमारे दो आदमी हो नहीं है साहबों के पास जिनकी पीठें छिल रही है। हमारा पूरा गांव लहूलुहान है। इन दो को हम जाकर नहीं छुड़ा सकते, जाकर हमारा ही लौट आना मुश्किल है। टंगिया चलाकर लौटना मैं नहीं चाहता... क्योंकि तब पूरे गांव पर खूनी खतरा लौटेगा। हम वनवासियों के बारे में सारा सभ्य संसार बड़े ही ओछे विचार रखता है कि अभी हम लौट चलें।

लौटना तय हो गया। सब लोग लौट पड़े।

चार बज रहे हैं। सरपंच श्री महादू लाल उइके के घर जाग हो रही गई है। उनके घर ही क्या पूरे बीजगांव में सभी गांवों की तरह चार बजे से ही सुबह लौट आती। आधी रात को जो लोग बांस काटने गये होते हैं वे वापस लौटने लगते हैं। जो लोग सो रहे होते हैं वे जागने लगते हैं। इने गिने बैलों और गायों के कोठे भी जाग जाते हैं। सरपंच महादू लाल उइके भी एक छोटे किसान हैं। गाँव में बड़े हैं यानि चालीस घरों वाले गांव के चुने हुये मुखिया... सुबह- सुबह दातून मुखारी वे आंगन में ही बैठकर करते हैं। आज जैसे ही लोटा लेकर वे आंगन में आये कि पांच मूर्तियों ने खडे होकर उन्हें 'जय देव' कहा। महादू चौक गये ! इतनी सुबह 'जय देव' करने का मतलब है मुसीबत

लोटा उड़ेलकर हथेलियां गीली करते हुये उन्होंने पूछा- क्या मुसीबत है ?

कलुआ ने मुसीबत को महत्वपूर्ण बनाते हुये कहा- आप पहले मुखारी कर लीजिये फिर बात होगी। महादूलाल उइके की हथेलियों से पानी फिसल गया। उन्होंने कुल्ला करके लोटा एक तरफ रख दिया। फिर बातचीत शुरु हुई। सारे सवाल सीधे पेट पर खड़े हो गये, सरपंच ने उन्हें घुटनों पर खड़े होने की सलाह नहीं दी। यह सही है कि गांववाले चोरी करते हैं... बेशक करते हैं... मगर चोर वे नहीं हैं। उनका पकड़ा जाना ठीक नहीं है, वे आखिर क्या करें ? सरपंच जानते हैं कि बांस का काम सरकार ने ही उन्हें सिखाया। उन्हें औजार दिये... भत्ता देकर छः महीने का स्कूल चलाया..आवक जावक के लिये साइकिलें दी कि अपने अपने माल की खपत के लिये बाजार तक आ जा सको.., उनकी आंखों में वे दिन लौट आये...

तब बीजगांव ठेठ देहात था. न शहर का पता, न शहर से वास्ता नून- तेल एक तेली बेच जाया करता था। लकड़ी, साज के पत्ते, बांसों की लाठियां, टोकने, चाप, झल्ली... बस यही कुछ उनके जीने का आधार था। बाकी थी बंजर जमीन.. पहाड़ी इलाका... कोदो कुटकी बाजरा फसल के नाम पर यही कुछ था... न धान न गेहूं न चना.. मिट्टी की दस हंडियों में ही दस घर के गोडों का विस्तार हो जाया करता था। धीरे- धीरे सरपंच महादूलाल उइके के पिता भल्लू गोंड ने नैनपुर और मण्डला की यात्रा की। फिर पटेल हुये और महादूलाल के लिये खेत बाड़ी का काम जुटाया। बंजर को खेत बनाया, धान लगाई और चुनाव के औजार को गांव तक लाया। गांव के लोगों को जामगांव तक ले गये और वोट डलवाया। फिर यह काम उन्होंने अपने लड़के महादू को सौप दिया। महादू ने बस्ती का विस्तार किया। दो चार तराई के गांवों से नजदीक आने को कहा अब तीन भरे पूरे गांव एक साथ हैं। जब तीनो गांवों ने जीने मरने की यह तरतीब निकाली तो सरकार का ध्यान भी इधर आकर्षित हुआ। वह दिन सबको याद है जब जंगल विभाग की एक गाड़ी बीजगांव के सरपंच महादूलाल के घर के सामने खड़ी हो गयी। सभ्य संसार में आने जाने पर भी वनवासी महादूलाल ने सरकार के इन नुमाइंदों को उठकर सलाम नहीं किया। सभ्य संसार की अधिसंख्या वनवासियों को इसी गोंडी ठसक पर मुंह नाक सिकोड़ती है। मगर बनावट विहिन इस ठस्स- अदा के सैंक, शर्मा, श्रीवास्तव दीवाने हुये जा रहे हैं। तब भी वे दोनों शर्मा और श्रीवास्तव ही थे। पहल उन्होंने ही की। सभ्यों की परम्परा के हिसाब से नमस्ते किया और पूछकर बैठे तथा फिर आने का मकसद बताया। घटे डेढ़ घटे में ही मामला तय हो गया। सारे घरों से लोग निकल आये। सबको पता चल गया कि शिविर लगेगा। शिविर उविर को खैर कोई क्या जाने..। पर मण्डई मेला का चश्का तो व्यापारी लगा ही गये थे सो वही सोचकर लोग इकट्ठे हो रहे थे। वह तो बाद में सरपंच ने बताया कि सरकार हम गोंडों का उद्धार करने के लिये यहां स्थानीय उद्योग सिखायेगी। हमारे गांवो में बांसों का काम होता है, सो बांसो का काम सिखाया जायेगा। पन्द्रह बीस लड़कों को आसपास के गांव से चुना जायेगा, छः महीने तक उन्हें यहां बांसों का तरह तरह का काम सिखाया जायेगा। काम के लिये औजार, बाँस ढोने और आने जाने के लिये साईकिलें और महीने के खर्च के लिये मासिक भत्ता दिया जायेगा। हुनर सीख लो। हुनर ही काम आता है। सरकार माई की कृपा हुई है... लाभ उठाओ जात पात का कोई बंधन नहीं है गोंड, बसोड़, धोबी, मोची, अहीर कोई भी आये और हुनर सीख लें। महादूलाल उइके ने खुद अपनी तरफ से अनुरोध किया... घर बैठे जो हुनर मिल रहा है उसे न सीखने वाला सारी जिन्दगी पछतायेगा... मैं इस काम में जवाबदार रहूंगा... समझ लो सच्चा काम है.. पुराने दिन नहीं है कि सभ्य दुनिया के लोग अध्यक्ष बने और सरकार का पैसा उड़ाकर चले गये... वे बनते ही अध्यक्ष इसके लिये है मगर अब ऐसा नहीं होगा.. तुम्हारे ही बीच के गोंड़- भोई अध्यक्ष और सचिव बनेगे... ठगी की कोई बात नहीं है... अब अपने अपने घरों के लड़को को भेजो। हफ्ते भर समझाने के बाद सदियों के छले गये लोगों को विश्वास आ सका। शिविर के लिये तीस के लगभग युवक युवतियां और बड़ी उम्र के ग्रामवासी जुटाये जा सके। नवयुवकों को सरकारी कौल के अनुसार साइकिलें मिल गयी एक बड़े मैदान में बांसों के टट्टों की दीवारें खड़ी हो गयी, झोपड़ियां उठ गई, औजार आ गये... बांसों का अंबार लग गया। नैनपुर के एक स्वतत्रता सेनानी हुतोलाल कर्मा ने अपने भाइयों के बीच फूल प्रसाद बांटकर शिविर का उद्घाटन कर दिया। छः महीने अच्छा काम चला। जंगल विभाग के बड़े- बड़े साहब बड़ी- बड़ी गाड़ियो में आकर देख गये... माल बनता गया और जगल विभाग की गाड़ियां उन्हें ढोती चली गयी। बांसों की कुर्सियां; तिपाये चोपाये, चटाईयां, पर्दे, फूलदान, झालरें... फानूस, बेलबूटा वाले गलीचे... ऐसी न जाने कितनी अदभुत, विचित्र अनदेखी चीजें बनती गई कि गांव वाले देखते रह गये। जिन बांसों को वे केवल बाड़ी रुधने का और गुरसी में जला देने या पांस, विजने और टोकनी तक उपयोगी समझते थे वहीं बांस इतने महत्वपूर्ण हो गये ? यह देखकर उनका उत्साह पंजों पर उचककर आसमान छूने लगा।

मगर छः महीने बाद ही कलई खुल गई। जंगल अनाथ हो गये... गांव सूने पड़ गये... शिविर खत्म... दो लड़के भोपाल बुला लिये गये बस। सरकार का काम खत्म... तुमने हुनर सीख लिया अब तुम जानो। औजार तुम्हारे पास है... जगल खड़े हैं.. अपनी पूरी शासकीय अजनबियत के साथ और ठग से खड़े हैं.. गांववाले। गांववालों ने देखा कि आज दूसरी बार वे जंगलो से निकालकर फेंक दिये गये हैं.. लकड़ी का जंगल तो पहले ही उनसे छिन गया था। हां तब ऐसा शिविर नहीं लगा था..- शहर से ठेकेदार आये थे। उन्होंने जंगल खरीद लिये थें और उन्हें लकड़ो काटने और तेंदू के पत्ते तोड़ने का काम देने आये थे। जब कुल्हाड़ियां पूरी तरह सध गई तो एक दिन पता चला कि सारे जंगल सरकार के है... ठेकेदार या सरकार से पूछे बिना कोई एक टहनी न काटे ऐसा हुक्म मिल गया निकल गया है और आज जब बांसो का हुनर हाथ आया है तो बांसों का सरकारीकरण हो गया.,. कि खबरदार जगल से सरकार की मर्जी के बिना कोई बांस न कटे। सरकारी की मर्जी किसके हाथ है गोड़ इसे जानते हैं। हुनर वाले हाथ बेकार होने लगे, औजार जंग खाने लगे। हारकर सबने सरपंच के आंगन में डेरा डाल दिया। हमारा तो सब कुछ छिन गया। जो हम जानते थे उसे छिनकर बिल्कुल नई चीज हमें सिखाई गई और औजार थमाकर जंगल छीन लिये। कि जैसे किसी किसान को बखर थमाकर बीज और खेत छीन लिये हों। हम तो कहीं के नहीं

रहे। सरपंच यह बीमारी तुम्हीं लेकर आये थे... तुमने ही मर्द बनकर जवाबदारी अपने ऊपर ली थी। अब तुम्हीं बताओ हम कहां जाये, कैसे जियें।

तब सरपंच फिर इधर उधर दौड़े थे। जंगल विभाग में गये कि सरकार! गांव मझदार में हैं... बचा लिजिये...। तब जंगल विभाग ने कहा.. बांस हमारे पास है, मगर योजना तो सरकार के पास है... सरकार से परमिट ले आओ और बांस ले जाओ। सरपंच सरकार के पास दौड़े। सरकार ने पूछा– कितना बांस चाहिये ? क्यों चाहिये ? कहां बेचोगे ? कैसे बेचोगे ? क्या योजना है ? कितने दिन की योजना है ? कितने लोगों की योजना है ? कितनी लागत होगी ? कितना मुनाफा होगा ? देश में बेचोगे कि विदेश में बेचोगे ? योजना रजिस्टर्ड हुई है या नहीं ?

सवालों के महाभारत ने सरपंच को यानि पूरे गांव को विमूढ कर दिया। किसी तरह बोला– सरकार माई बाप है। सब सवालों को हम नहीं समझते। सरकार ने ही हुनर सिखाया है वही इन सवालों का उत्तर सिखाये। सरकार ने कहा– सभी लोगों को उन्नति और व्यवसाय के सासान अवसर हैं। माल बनाओ, योजना बनाओ, बाजार ढूंढों... अपनी बेहतरी करो। हर बात में सरकार मुंह ताकना ठीक नहीं। यह जवाब सुना तो ठगे से सरपंच लौट आये। सरकार के जवाब के अनुकूल कुछ दिनों तक साझा दूकान भी लगाकर देख ली। बांस के लिये हुज्जतें शुरु कर दी। जगह के लिये सरकार नियम कानून बताने लगी। सबको पैसा चाहिये था। बम्बई के फुटपाथी गुण्डों की तरह सबको हिस्सा चाहिये था। धन्धा अभी जमा नहीं था। मुनाफा होता तो कैसे ? मगर इससे किसी को क्या। उनका हिस्सा सबसे पहले। मदद के लिये कोई सरकार माई- बाप नहीं है.. लूटने के लिये सभी सरकार के साथी हैं। बनियों ने अपने इलाके बैठने नहीं दिया। गोंड़ व्यापार में उनकी बराबरी करेंगे। यह मजाल है ! हारकर वनवासियों ने गांव की राह ली। तभी नैनपुर के एक अग्रवाल सेठ आये, बोले– सरकार को तो तुमने देख लिया। अब हमारी बात सुनो: हम तुम्हारे लिये क्या करते हैं यह भी देख लो। अब तुम मारे- मारे नहीं फिरोगे। माल हमें दो बाजार की जिम्मेदारी हमारी। माल कैसे बनाओगे, यह जिम्मेदारी तुम्हारी। हिम्मत से काम लो। पूछकर जंगल में घुसने की बजाय अधिकार से घुसो। तुम्हें भी जीने का अधिकार है कि नहीं। अपना रास्ता खुद बनाओ, वर्ना रह जाओगे मुंह ताकते और उस व्यापारी की बात में भोले- भाले भील आ गये। मरता क्या न करता वाली बात थी। गांव वालों ने कलुआ मलुआ जैसे लड़कों को पकड़कर इस धंधे में लगा दिया। अपनी हिम्मत से और जंगल वालों से मर कुटकर इन लोगों

(गीत)

लिखकर अपना नाम

जेबों में पत्थर रखने का हम पर है इल्जाम।
शीशे की बस्ती में हम तो होंगे बदनाम॥

इसमें हमने देखा– नंगा कपड़े का व्यापारी है,
इसमें दानी को देखा करता काला बाजारी है,
इस बस्ती का हर उपदेशक माना हुआ शिकारी है,
जाल सदा फैलाकर पढ़ता गीता यहां पुजारी है,
शीश महल में रहने वाला राजा यहां भिखारी है,
जनता के निर्दोष खून में डूबा हर दरबारी है,

इनका वश जो चले– बेच दें अंबर ऊंचे दाम।
इनका वश चले तो कर दें धरती को नीलाम॥

इसमें हमने देखा– हर फन में माहिर फनकारों को,
चोरों को चोरी में तो बटमारी में बटमारों को,
डाकू को डाका में माहिर, हत्या में हत्यारों को,
तस्कर जैसे हुनरबाज भी देखा यहां हजारों को,
इसमें देखा– लूटपाट में माहिर राजकुमारों को,
इसमें देखा– देश बेचने वाले सब गद्दारों को,

ये ऐसे बहुरुपिये जिनका ठगना केवल काम।
गांधी वादी सुबह शाम को छलकाते हैं जाम॥

शीश की बस्ती की भैया! सच्ची यही कहानी है,
दीवारों पर परदें हैं, पर हर परदा बेमानी है,
इसकी वतन परस्ती की बस केवल यह निशानी है,
जेबों में बाजार है, इसकी मुट्ठी में रजधानी है,
"जन गण मन अधिनायक जय हे" इसको याद जुबानी है,
भारत भाग्य विधाता जिसको सुनकर पानी पानी है,
प्रजातंत्र को रौंद रहे हैं ऐसे सुबहो– शाम।
जैसे पागल घोड़े की हों टूटी हुई लगाम॥

खुले आम चलता है ऐसे इसका हर धंधा काला,
जैसे रिश्ते में लगती हों यह सत्ता इसकी खाला,
शीश महल के बिगड़ैलों ने महादेश को यूं घाला,
अच्छे- अच्छों की जिब्हा को जो जैसे मार गया पाला,
लेकिन कोई क्या कबीर के मुंह पर लगा सका ताला,
मर मर कर सुकरात जिएगा पीकर भी विष का प्याला,

अपनी जेबों में पत्थर है सच्चा है इल्जाम।
हमने हर पत्थर फेंका है लिखकर अपना नाम॥

जीवन यदु

("सापेक्ष" ६/७ से साभार)

ने अब तक इस धंधे को यहां तक खींचा। अब मुश्किल है। लोग पकड़े जाते हैं तो वही अग्रवाल सेठ अपनी जात दिखा देता है। गोंड़ों को पहचानता ही नहीं, वह सरकार के काम में हाथ नहीं फसाना चाहता। मुनाफे की बात आती है, मेहनताना या माल के दाम की बात आती है तो सौदा करने लगता है। रुपयों में माल खरीदता है और पांच रुपयों में बेचता है। खतरा तुम्हारा, मेहनत तुहारी, मुनाफा उसका. नहीं अब सरकार से फैसला होना चाहिये। आज दो लोग अंदर हुये हैं, आज ही पूरा गांव जेल में डाल दो मगर मेरी मिट्टी मेरे गांव ही में खराब मत करो। इस फैसले तक पहुंचते सरपंच के नथुने फूल गये। उन्होंने लठिया उठाई, बडी पहनी और पन्हई पांव में डालकर आंगन फलांगते हुये बोले- "यह ऐब मेरी वजह से गांव में आया है। अगर इसका हल नहीं निकाल सका तो मुझे क्या हक है गांव में मुखियागिरी का।"

पांचों फरयादी चेहरे खिल गये। यह होता है अपना आदमी। उनके हौसले जाग उठे। दिन निकल आया था। तीनों गांवों के पन्द्रह बीस समझदार लोगों को लेकर सीधे जंगल चौकी पहुंच गये। जंगल चौकी में पकड़े गये लूला और भेंगा की हालत देखकर वे जरा भी नहीं चौंके। अभी जो लोग दफेदार की टहल कर रहे है, और चौकी में पड़ी लकड़ियां चीर कर साहबों के चूल्हों में जलने योग्य आकार दे रहे हैं। उन लोगों ने और क्या क्या बेगार नहीं की होगी, यह किसे नहीं पता। इस तरफ ध्यान दिये बिना सरपंच ने दफेदार को आवाज दी। दफेदार ने इतनी भीड़ देखी तो परेशान हो गया मगर अभ्यास से आई अकड़ के साथ बोला- क्या बात है?

सरपंच ने उसकी अकड़ पर भी ध्यान नहीं दिया। उन्होंने इतना कहा "दफेदार साहब, आप सरकारी मुलाजिम हैं। जंगल की रक्षा का काम आपको सौंपा गया है, वह आपने निभाया। हमारे गांव के दो चोरों को पकड़ लिया हैं, पांच छूट गये हैं। हम उन्हें ले आयें हैं, आप इन्हें भी पकड़ लीजिये यही नहीं साहब, यहां जितने लोग खड़े हैं, सब चोर है इन सबको गिरफ्तार कर लीजिये... में इनका सरपंच हूँ.. ये नहीं होंगे तो मैं कहां होऊंगा।"

दफेदार मुस्कुराने लगा। वह अनुभवी था। जिस मकसद से अपराधी पकड़े जाते हैं बात उस मकसद तक पहुंच गई थी। उसने सरपंच से कहा "आपसे बात करनी है अन्दर आइयें।";

सरपंच इस अन्दर आने का उद्देश्य समझते थे। वे अंदर जाकर भी क्या कर सकते थे। भूखे नंगे लोगों की व्यर्थ ही अंदर का आमंत्रण मिल रहा था और अंदर जाकर आज का मामला खत्म करके आगे फिर यही दिन नहीं देखना था। वही से खड़े होकर उन्होंने कहा- अन्दर आनेवाली बात नहीं है। हम अपने हाथों और औजारों के लिये काम मांगने निकलें हैं... मांगने वाले हैं हम... किसी को क्या देगें। आप इन पांचों को भी यहां बैठा लीजिये और हमें इजाजत दीजिये। हमारी अब सारी गुजारिश सरकार से है।

दफेदार कोई चोर नहीं था। वह जो कुछ कर रहा था एक दूसरे की जरुरत के लिये कर रहा था वह चाहता तो बांसों के सामानों को हड़पकर सबको भाग जाने देता। मगर बांसों के सामानों का वह करता भी क्या। जरुरत से बड़ा पैसा है जिसके सामने जरुरत कुछ भी नहीं। पैसा ही सबकी जरुरत है। इसी जरुरत के लिये दफेदार ने दो लोगों को पकड़ा था। कि इनके खैर ख्वाह आयेंगे और यह जरुरत पूरी करके अपने लोगों को छुड़ाकर ले जायेंगे। मगर सरपंच की बात सुनकर उसे अपनी रात भर की मेहनत पर पानी पड़ता नजर आया, किसी की कोई इच्छा अधूरी रह जाये तो जो दुख उसे होगा वही दुख उसे हुआ। इसी दुख से क्रोध भी उत्पन्न होता है। दफेदार ने इसी क्रोध में कड़क कर कहा "आप सरपंच हैं तो सरकार को झुका लेंगे? आप शिकायत करेंगे

(शेष पृष्ठ ९ से जारी)

के विचारों का समर्थन किया। इस प्रकार संगठन एवं प्रस्ताव सत्र समाप्त हुआ। भाषा के इस विवाद को स्थानीय प्रतिक्रियावादी अखबारों ने खूब बढ़ा चढ़ाकर छापा।

रात में ८.३० बजे रवीन्द्रालय से लेखकों एवं सांस्कृतिक कर्मियों का एक रंगारंग जुलुस निकाली गई। जुलुस में "इंकलाब जिन्दाबाद, 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद' पूंजीवाद खत्म हो" के नारे लगाये जा रहे थे। जुलुस रिफाहे आम क्लब में समाप्त हुई जहां सज्जाद जहीर और प्रेमचंद ने अपने साथियों के साथ बैठकर प्र. ले. सं. का गठन किया था उसी मंच पर गुलाम रब्बानी ताबां, डॉ. खगेन्द्र ठाकुर, कामतानाथ कैफी आजमी, डॉ. कमर रईस इरीना भीष्म साहनी, मेसेज आजमी आदि बैठे थे। श्री तांबा ने मुंशी प्रेमचंद और सज्जाद जहीर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया तथा उपस्थित रचनाकारों को शपथ दिलाई। इस अवसर पर कैफी आजमी ने प्रेमचंद और सज्जाद जहीर को याद करते हुए कहा- "बन्ने भाई! आपने जो कलम चलाना सिखाया है वह बिक नहीं सकती। वह झुक नहीं सकती। चाहे सर कट जाये। बन्नेभाई (सज्जाद जहीर) आपने जो मसाल जलाया है, आप यकीन कीजिए वह और पचास साल तक जलेगा।" इसके साथ ही सभा कार्यक्रम समाप्त हुआ। समारोह में 'वसुधा' 'पहल' 'कदम' तथा सापेक्ष' 'प्रयोजन' तथा अन्य महत्वपूर्ण लघु पत्रिकाओं के विशेषांक जारी किये गये। चित्र प्रदर्शनी, कला प्रदर्शनी एवं कविता पोस्टर ४७५ की संख्या में लगाये गये थे। इस तरह दिनांक ११ ४ ८६ को प्र. ले. सं. का ऐतिहासिक स्वर्ण जयंती कार्यक्रम समाप्त हुआ।

द्वारा :- सांवलाराम डाहरे

तो सरकार मान लेगी ? जाइये वह भी करके देख लीजिये। आपके दो आदमी अभी मेरे पास हैं... मैंने गिरफ्तार किया हैं. बाकी कितने भागे... कौन कौन भागे मुझे नहीं मालूम... पांच भागे कि पचास... यहू मैं आपके कहने पर थोड़े ही मान लूगा यह पुलिस देखती रहेगी। जाइये जैसी आपकी मर्जी.., जब थानों में धुत्कारे जायेंगे और पचासों आदमी अंदर होंगे तब पता चलेगा... आप लोग समझते हैं कि भीड़ एक तोप है कि जब अन्याय हुआ और खड़े हो गये उसे लेकर... भीड़ तोप नहीं जाइये यह भी देख लीजिये।"

मेहरबानी है, सरपंच ने विचलित हुये बिना कहा और अपने साथ आये लोगों के साथ नैनपुर की तरफ चल पड़े। रास्ते में खड़े होकर उन्होंने दफेदार की बातों पर विचार किया उसकी बातों में वजन था, कचहरी का और थाने का रोना सबका जाना समझा था। अब क्या किया जाये ! कलेक्टर तहसीलदार सीधे उनकी बात तो सुने से रहे। सरकार लाख फरमान निकाले मगर गोंड़ भोइयों की तरफ ध्यान कौन देता है अपने गिरफ्तार लड़कों से बोले "तुम अभी अपराधी नहीं हो और जब अच्छे फल की आशा ही नहीं तो बेकार क्यों ? भलाई के लिये सब कुछ सह जाओ पर गुलामी नहीं" यह कहकर सरपंच ने कहा– हम किसी सरकार के पास नहीं जायेंगे. हमारी बिरादरी के सुराज सैनिक सरकार का वजीफा लेते हैं, वहो आये थें शिविर का उद्घाटन करवाने। उन्हीं से कहेंगे, कि आप अब बताओ कि हमारी क्या तकदार है। कुछ ढीले पड़ गये कि सरपंच कहीं यों हो झटका तो नहीं रहा है, मगर देख लें यह भी। विश्वास बड़ी चीज है, छल करेगा तो किसे मुंह दिखायेगा यह; चलो इसी बहाने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुतोलाल कर्मा को भी देख लेंगे। यहीं सोचकर सब सूरज चढ़ते ही हुतोलाल कर्मा के घर पहुंच गये। वाह क्या घर है। तीन रंगों का झण्डा हमेशा दरवाजे पर लटका रहता है। बड़े बड़े तिरंगी नेताओं की तस्वीरें कमरे में हैं। कहते हैं तब गोड़ों के इलाके का अपना कोई आदमी इन बड़ों के बराबर नहीं था। तभी हुतोलाल कर्मा को उन लोगों ने आकर अपनी सभा में शामिल किया था। फिर सबके साथ सफेद कपड़े पहनकर यह भी जेल गये। स्वतंत्रता के लिये यह बलिदान कम नहीं है। इस बलिदान के लिये उन्हें बाद में वजीफा दिया गया जो हर महीने मिलता है। और क्या चाहिये जिन्दगी के लिये. मान सम्मान मिला हुआ है... बस का पास है... प्रदेश में कहीं भी घूमों ! समाज में और किसके पास है ऐसा राजकीय सुख सरपंच के साथ आये बाकी सारे लोग इसी माया में उलझे रह गये। मगर सरपंच तो दूसरी ही धुन में था। सेनानी जी के आंगन में आते ही माचिस हाथ में ले ली। सेनानी जी दिवान पर सफेद कपड़ा बिछाकर सरकार समर्थक दैनिक से अपने होने और बैठने की गरिमा बढ़ा रहे थे। उन्हें पुकारकर सरपंच ने कहा– "दद्दाजी, माचिस लाया हूं। जिन हाथों से आपने हमारे गांव में बांसो का शिविर लगाया था, झोपड़ियां बनवाई थीं उन्हीं हाथों से उन्हें जला दीजिये। जो अलख हमारे गांव में जलाई थी वह बुझ गई है। आपकी कृपा से हमारे गांव की कोई जात नहीं रह गई... गोड़, अहीर, बसोड़ सबको एक बना दिया... मड़ुआ, भिलमा, चिरौंजी छीनकर औजार थमा दिया... मगर बांस क्यों छीन लिये... महाराज आपके सौंपे हुये बांस जंग खा रहे हैं। या तो बांस दीजिये या हमें भी बांसों के जंगल में औजारों के साथ गाड़ दीजिये।

गांव वालों के इस अंदाज को सेनानी हुतोलाल कर्मा अच्छी तरह जानते हैं। उनकी पहुंच भी जानते हैं। उनके संतोष को भी। शालीनता की अपनी राजनैतिक मुस्कान के साथ बोले : "संतोष रखो सब ठीक हो जायेगा। अंग्रेजों के जमाने का अधर मिटाने के लिए हम जेल गये। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का वजीफा ...."

'यह रामायण न सुनावें महाराज !" सरपंच ने बीच में ही कहा : "आप कैसे जेल गये, कैसे आपको वजीफा मिला वह हमें भी मालूम है, मगर उससे क्या ? उससे आपका और आपके परिवार और आपकी पार्टी वालों का इतिहास बनता है। उस कथा से हमारे गांव में तो बांस नहीं पहुंचते। हम तो बेरोजगार ही रह जाते हैं। या तो आप बांस दिलाओ या जवाब देदो।"

गांव वालों से ऐसी निर्दयता की उम्मीद उन्हें नहीं थी। उनकी गरिमाधारी छवि धूमिल पड़ गई। माथे पर पसीना चुहचुहा आया। सांवला चेहरा तांबिया हो गया। थूक निगलकर वे कुछ सोचने लगे। फिर उनकी आँखें बंद हो गई। पसीने की धार जब गाल और गर्दन से बहकर कुर्त्ता भिगाने लगी तो धोती के छोर से माथा पोंछते हुए बोले : "मुझे वक्त दीजिये। हफ्ते भर में मैं आपका काम करवाऊंगा या वजीफा लेना बंद कर दूंगा" इतना कहते - कहते उनकी आवाज रुध गई। आखों से शायद आंसू भी गिरे हों। मान-सम्मान और वजीफे का मोह इतना कमजोर थोड़े ही है कि जरा सी भावुकता से टूट जाये।

गांव वालों ने यह दृश्य अचरज से देखा और सरपंच के समझाने पर लौट आये। गांव और जंगल तक पहुचते शाम हो गई थी। उस सांवली संध्या में जंगल अनाथ लग रहे थे, गांव अनाथ लग रहा था। आने वाली रात अनाथ लग रही थी। अपने अपने ठस सारे अनाथपने के बावजूद एक छोटा सा आश्वासन अलाव बना जल रहा था जो आने वाले कल को रोशन किये हुए था। अब पेट और हुनर को जिन्दा रखने के लिए चोरी नहीं करनी पड़ेगी। दिल धीरे धीरे ताल पर आने लगा और अधियारे में दबे हुए जंगल में बांसों के गाने की आवाजें आने लगी।

(उस रात उस घटना और उस आश्वासन को डेढ़ साल हो गये हैं। शिथिल कंधों पर आश्वासन की नींद सोते सोते कुल्हाड़ियां बीमार पड़ गई हैं। अनाथ जंगल अपनी औलादों के लिए रो रहे हैं। मगर अलावों की आग अभी बुझी नहीं है। वह कभी भी तड़क सकती है। और शहर जाने की बजाय सीधी जंगल जा सकती है।)

चतुर्थ राज्य सम्मेलन बिलासपुर में म. प्र. प्र. ले. सं. के चुने गये नये पदाधिकारी :-

अध्यक्ष :- श्री हरिशंकर परसाई

कार्यकारी अध्यक्ष :- डॉ. कमला प्रसाद

महासचिव :- श्री ज्ञानरंजन

अध्यक्ष मण्डल :- श्री प्रमोद वर्मा, श्री मायाराम सुरजन, श्री रामबिलास शर्मा, श्री प्रकाश दीक्षित, डॉ. श्यामसुन्दर मिश्र, श्री मोहन श्रीवास्तव, डॉ. धनंजय वर्मा, डॉ. राजेश्वर सक्सेना ।

सचिव मण्डल /क्षेत्रीय संयोजक ;-

(१) डॉ. मलय (जबलपुर संभाग)
(२) डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव (छत्तीसगढ़)
(३) श्री भगवत रावत (भोपाल)
(४) ,, रफीक खान (सचिव + कोषाध्यक्ष)
(५) ,, महेश कटारे (ग्वालियर)
(६) ,, देवीशरण ग्रामीण (रीवा)
(७) ,, प्रमोद पाण्डे (सागर)
(८) ,, राजेन्द्र शर्मा (भोपाल)

कार्यकारिणी ;-

श्री वेदप्रकाश अग्रवाल, पुन्नीसिंह यादव, सुश्री उषा वैरागकर, श्री राजीव कुमार, भगवानदास सफड़िया, डॉ. आलोक वर्मा, श्री लोक बाबू, डॉ. नन्दूलाल चोटिया, सर्वश्री सुबोध श्रीवास्तव, कुन्दनसिंह परिहार, राजेन्द्र दानी गोरेलाल चंदेल, कवष, महावीर अग्रवाल, रवि श्रीवास्तव, डॉ. वीरेन्द्र मोहन, कैलाश विकल, लेखराम मृदुल, शिवनारायण शर्मा, प्रत परावकदम, कमल जैन, नरेन्द्र मौर्य अभिलाष दवे, मदन आचार्य, दादूदयाल, सुरेश शर्मा, श्रीमती विनोद तिवारी, सोमेश्वर सिंह, चन्द्रकुमार तारण, मकबूल अहमद, रामशैल गर्ग, रामजीलाल चतुर्वेदी, लीलाधर मंडलोई, सोमदत्त, पूर्णचन्द्र रथ, शशांक, हिमांशु राय, मिर्जा मसूद, ललित सुरजन, प्रभाकर चौबे, महेन्द्र फुसकेले, डा. रामलखन गुप्ता, सुरेश शर्मा, राजेन्द्र ओझा, मुमताज भारती, तौहीद आलम, रमेश अनुपम शीतेन्द्रनाथ चौधुरी, अनिल खम्परिया, विनोद कुमार शुक्ल प्रताप ठाकुर, सेवाराम त्रिपाठी, कुमार अंबुज ।

वर्किंग ग्रुप ;-

सर्वश्री हरिशंकर परसाई, ज्ञानरंजन, मलय, स्याम सुन्दर मिश्र, कमला प्रसाद, धनंजय वर्मा, रमाकान्त श्रीवास्तव !

(म. प्र. प्र. ले. सं. की बुलेटिन फरवरी १९८६)

'आरंभ' के लिए शुभकामनाएं-

लाला पान भंडार

(स्वादिष्ट पान मिलने का एकमात्र स्थान)

थाना चौक, दल्लीराजहरा

जिला- दुर्ग (म. प्र.)

'आरंभ' बुलेटिन के लिए शुभकामनाएं

अमर मेडिकल स्टोर्स

न्यू मार्केट, दल्लीराजहरा

जिला- दुर्ग (म. प्र.)

इकाई की खबरें:-

१. प्र. ले. सं. दल्ली राजहरा इकाई द्वारा निराला जयंती का कार्यक्रम शा. क्र. ६ के प्रांगण में आयोजित किया गया। जिसमें सांवलाराम डाहरे ने अपना आलेख "निराला कृतित्व एवं व्यक्तित्व" का पाठन किया। जिस पर कोमलसिंह शार्थी दादूदयाल, राजद्वस्थो, अमरचन्द बर्मन, अब्दुल वहीद खाँ 'कफन', शिखरचन्द जैन, जे. सिंह, नसीम आलम नारवी एवं चन्दनसिंह ने चर्चा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जे, सिंह ने किया तथा संचालन दादूदयाल ने।

२. १६.३.८६ को प्र.ले.सं. दल्ली राजहरा इकाई की बुलेटिन 'आरंभ' का विमोचन जन कवि डॉ. नन्दूलाल चोटिया ने किया। इस अवसर पर श्री थानसिंह वर्मा प्राध्यपक दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव, श्री अशोक शर्मा, डॉ. वर्मा, मजदूर नेता डी. के. राव (राजहरा) श्री आर. एन. चौबे (महामाया) ने अपने विचार रखें एवं शुभकामनायें दीं। कार्यक्रम के अध्यक्ष थे श्री बंगालीप्रसाद ताम्रकार तथा संचालक दादूदयाल थे। श्री नसीम आलम नारवी (प्रधान संपादक) ने उपस्थित जन समूह के प्रति आभार व्यक्त किया।

३. पिछले दिनों प्र.ले.सं. राजहरा इकाई ने एक गोष्ठी का आयोजन करके पाकिस्तान के तरक्की पसंद लेखक सैय्यद सिब्तेहसन की अचानक मृत्यु पर दुख प्रकट करते हुये उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

❀❀

"आरंभ के लिये शुभकामनायें-

भुइयाँ के सिंगार

छत्तीसगढ़ी लोक कला मंच

दल्ली राजहरा

इप्टा:-

१. लखनऊ में आयोजित प्र.ले. सं. के स्वर्ण जयंती कार्यक्रम के दौरान इप्टा के कलाकारों ने १० अप्रेल को रात में १२ बजे अपनी एक पृथक बैठक का आयोजन किया। जिसमें विभिन्न प्रांतों से आये प्रतिनिधियों ने अपने- अपने प्रांत की इप्टा गतिविधियों की जानकारी दी। संचालन जितेन्द्र रघुवंशी (आगरा) ने किया। उन्होंने बताया कि इप्टा का राष्ट्रीय अधिवेशन नवम्बर १९८६ में आंध्रप्रदेश में होना तय है। इसके पूर्व सभी प्रांतीय सम्मेलन अक्टूबर १९८६ तक सम्पन्न हो जावेगा।

२. इप्टा दल्ली राजहरा इकाई ने पहली बार मंचीय नाटकों के दायरे से निकलकर सड़क नाटक का प्रदर्शन किया। रमेश उपाध्याय द्वारा लिखित "हरिजन दहन" का दल्ली राजहरा के तीन स्थानों पर तथा कुसुमकसा के दो स्थानों पर सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया। दर्शक काफी तादाद में उपस्थित थे। नाटक में सर्वश्री राजेन्द्रकुमार, तुलसीदास गोराई, देवेन्द्रपाल, प्रमोद तिवारी, मोहम्मद शफीक, हुकुमचंद बोकड़े ने अच्छी भूमिका निभाई। निर्देशन सांवलाराम डाहरे ने किया था।

'आरंभ' की निरंतरता के लिये अशेष शुभकामनायें-

संयुक्त खदान मजदूर संघ

(एटक)

दल्ली राजहरा, जिला- दुर्ग (म.प्र.)

"आरंभ" का प्रवेशांक मिला। मेरी बधाई स्वीकारे। प्रूफ की गलतियों से बचें, और कतरनों को बुलेटिन से अलग रखें। जब रचनाओं का अभाव होता है तब पूर्व प्रकाशित सामग्री को शामिल किया जाता है। यह मेरा सुझाव है। आप इसे सम्पादन कार्य में दखल न समझें। कुछ और सलाह स्थानीय रचनाशीलता का सर्वोत्तम आने दें। इस अंक की सामग्री बढ़िया है। 'कवष' ठोस और डाहरे जी की रचनाएँ अच्छी लगी। सहयोग राशि का तो कहीं जिक्र तक नहीं है। कम से कम लागत मूल्य तो सहयोग के रुप में लेना ही चाहिये। लम्बी रचना की अपेक्षा छोटी रचना ही दें। इससे विविधता रहेगी। मुझे खुशी है कि दल्लीराजहरा की प्र.ले.सं. इकाई ने अपना प्रकाशन "आरंभ" किया है।

-डॉ० वीरेन्द्र मोहन

हिन्दी विभाग, सागर विश्वविद्यालय, सागर

"आरंभ" मिला। बधाई ! मैं सचमुच बहुत ही खुश हूँ। खासकर तुम्हारे त्वरित कदम से..... और यह कि-

कंटकों के शीर्ष पर बैठे हैं तो क्या,
ये उड़े कि वो खुला आकाश है,
पंख है, फैला हुआ विश्वास है,
शुभकामनाओं सहित !

-रामकुमार रामरिया

"हिन्दी विभाग" इस्पात भवन, भिलाई

"आरंभ" अंक एक मिला। प्र. ले. सं. दल्लीराजहरा ईकाई का बेहतर प्रयास है। नये रचनाकारों को आप प्रोत्साहित कर रहे हैं, यह अच्छी बात है। लेकिन प्रदेश में प्र.ले.सं. की गतिविधियों की यदि संक्षिप्त रपट शामिल कर सकें तो साथियों को जोड़ने में मददगार होगी। हम आपको पूरा सहयोग करेंगे।

-सोमेश्वर सिंह

सचिव, प्र. ले. सं. सीधी

"आरंभ" का प्रवेशांक देखा। अच्छा निकला है। बधाई स्वीकार करें। सभी सामग्रियों का चयन अच्छा है। पृष्ठों की इतनी अधिक संख्या देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। अंक की कवितायें अच्छी है। आशा जगाती है। साँवलाराम डाहरे, घनश्याम तिवारी, स्वरुप कुमार जैन दिनेश कुमार मखीजा, शिखरचन्द जैन एवं कवष की दृष्टि पैनी और सटीक है। इन्हें मालूम हैं कि कहां किस तरह ऊंगली रखी जानी है। विश्वास है इतने सारे सक्रिय रचनाकारों को लेकर "आरंभ" का आगामी अंक शीघ्र निकलेगा।

-विजय वर्तमान

रिसाली सेक्टर, भिलाई

"आरंभ" का प्रथमांक प्राप्त हुआ। आप सबकी मेहनत के लिये बधाई ! अंक अच्छा हैं और अच्छा बनाने की कोशिश करें। हर हैंडिंग के आगे- पीछे सजावट के उद्देश्य से जो चिन्ह अंकित किये हैं, वे बचकानापन बताते हैं। अगले अंक से ऐसा न करने दे। सामग्री अच्छी है। नये लोगों की रचनाओं के प्रकाशन से पहले उन पर बहस कर लें। इन्दु शंकर "मनु" की कहानी अच्छी है लेकिन उनका उद्देश्य डगमगाया हुआ है।

-पुन्नीसिंह

कृष्णानगर, शिवपुरी (म.प्र.)

"आरंभ" का प्रथम अंक बहुत ही बढ़िया है। इस अंक में "समकालीन कहानी और किसान" डा. वीरेन्द्र मोहन एवं इन्दुशंकर मनु की कहानी 'प्रयास' एक रोचक एवं पठनीय है।

-अनिरूद्ध दास

नंदिनीनगर

आरंभ के लिए हमारी

हार्दिक
शुभकामनाएँ

DILIP SHUKLA

Civil & Transport
Contractor

DALLIRAJHARA Dist— Durg (m. p.)

सम्पर्क सूत्र:-

दादूदयाल संपादक 'आरंभ'

१६ (१) ।।B अस्पताल सेक्टर
दल्ली राजहरा, जिला- दुर्ग (म.प्र.)
४९१२२८

'आरंभ' बुलेटिन अनियतकाल और अव्यवसायिक।
सम्पादन एवं प्रबन्धन पूर्णतः अवैतनिक (बगैर किसी लाभ के)
प्रकाशक- प्रगतिशील लेखक संघ, दल्ली राजहरा ईकाई।

इस अंक का सहयोग- २) ००
वार्षिक- १८) ००
मुद्रक- लाला प्रिन्टर्स, दुर्ग चौक राजनांदगांव